रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

❁ श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ❁

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

* चतुर्थ भाग *

लेखक :
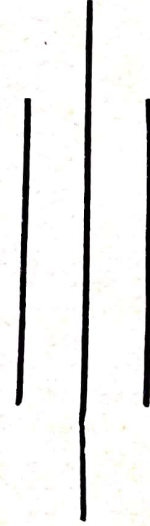
श्रीमद् अग्रदेवाचार्य वंशावतंश अनन्त श्रीजानकीशरणजी
महाराज मधुकर तच्चरणारविन्द भ्रमर
"सीताशरण"

श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल, श्री रामकोट
श्री अयोध्याजी (उ०प्र०)

श्री मैथिली रमणो विजयते

श्रीमत्यै सर्वेश्वर्यै श्रीचारुशीलायै नमः

श्रीमन्मारुतनन्दनाय नमः

श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः

श्री सद्गुरवे नमः

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

चतुर्थ भाग

लेखकः– श्रीमद्अग्रदेवाचार्य वंशावतंश

अनन्त श्री जानकी शरण जी महाराज मधुकर

तच्चरणारविन्द भ्रमर '**सीताशरण**'

प्रकाशक :–

श्री जानकी जीवन शरणजी (जसराज माहेश्वरी)

श्रीराम भवन मोती चौक

जोधपुर (राज०)

(श्रीराम नवमी के पावन पर्व पर)

प्रथमावृत्ति–१००० ❁ न्यौछावर–२१)रु०

[सम्वत् २०४७ सन् १९९०]

❁ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ❁

अनन्त श्री विभूषित आद्य जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

स्वामी श्री हर्याचार्य जी महाराज

"श्री मठ" काशीपीठाधीश्वर ए३८/२३ कोनिया, वाराणसी

स्वकर्मणा भवेत् दुःखं सुखं तेनैव कर्मणा ।
तस्माच्च पूज्यते कर्म सर्वं कर्मणि संस्थितम् ।।

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीसीताराम जी का स्वरूप अनेकानेक शब्दों भावों, उद्गारों के द्वारा वेद, शास्त्र पुराण, उपनिषद आदि ने व्यक्त किया है। परन्तु नारद भक्ति सूत्रकार ने (सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा) २।। सूत्र में स्पष्ट रूप से प्रेमा भक्ति को ही स्वीकार किया है। (सा कस्मैवरम प्रेम रूपा)– वह भक्ति सम्पूर्ण सृष्टि विधायक श्री सीताराम स्वरूप में परम प्रेम रूपा है। वैसे शास्त्रों में प्रेम भक्ति पाँच प्रकार के भाव से अभिव्यक्त किया गया है। "शान्तोदास्यं वात्सल्यं सख्य शृङ्गारमेव च। पञ्च भेदर्विभिः प्रोक्ता भक्तिर्रागानुगात्मिका।" इसी को पंचरसोपासना भी कहा जाता है।

इसी प्रेमा भक्ति के रूप में "श्री युगल रहस्य माधुरी विलास" की पावन निर्झरणी का चतुर्थ भाग सुललित पदा-वलियों में अनुवद्ध कर श्री स्वामी सीताशरणजी महाराज ने भक्तों के समक्ष उपस्थापित किया है। इसमें श्री अवध में सीतारामजी के रहसिभावों की पूर्ण झाँकी, कथा, भाव-रसाशिक्त हैं। श्री स्वामी सीताशरणजी का यह सुकर्म सर्वथा स्तुत्य है। इस ग्रन्थ से कथा रसिकों भावुकों अध्यात्म प्रेमियों का परम उपकार होगा। ऐसा मेरा विश्वास है। इस पुस्तक से भक्ति रस का प्रचार-प्रसार तथा जनता को परमानन्द प्राप्त हो यह मेरी शुभ कामना है।

—जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य
स्वामी हर्याचार्यः

विनम्र निवेदन

अनन्त ऐश्वर्य माधुर्य प्रेम रस सुधा सिन्धु, भगवान् श्री मैथिली रमण जू की अहैतुकी कृपा से "श्री युगल रहस्य माधुरी विलास" का चतुर्थ भाग पूर्ण हो गया, यद्यपि छन्दानुवाद करते समय विशेष ध्यान दिया गया, कि मूल ग्रन्थ के श्लोकों का भाव यथावत रूप में ही लिखा जाये, तथापि अबोधता एवं बुद्धि के प्रमाद वश यदि किसी श्लोक का भाव यथावत नहीं लिख पाया हो, तो सुबोध विज्ञ पाठकों से विनम्र निवेदन है कि लेखक को अलपज्ञ जान कर क्षमा करें।

भूल होनी मानव के स्वभाव में मिलकर स्वभाव ही बन गई है। अस्तु ग्रन्थ लेखन तथा प्रकाशन में अनेक भूलें बन गई होंगी। श्रद्धेय पाठकों से निवेदन है कि अपनी बस्तु को सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। गुणग्राही भक्तों को तो गुणों के संग्रह की ही आवश्यकता है। दोष दुर्गुणों की ओर दृष्टिपात न करना ही महतजनों की महानता है।

इस चतुर्थभाग के त्रयोदशवें अध्याय में भगवान भास्कर जब तुलारासि पर स्थित हुये उस समय राजकन्यायों के रास का प्रसंग है। लीला विनोदार्थ श्री मैथिली जू का मान करना, प्रीतम का प्रिया वियोग में सन्तप्त होकर अन्तर्द्धान होना। सखियों के आराधना करने पर युगल सरकार का प्रगट होना, बृश्चिकराशि पर सूर्य आते समय साध्य कन्यायों के रास कर प्रसंग है, प्रीतम का सखिरूप बनाकर प्रिया जू से वार्ता करना, सखी का प्रीतम को अपनी वेणी से बांधना।

चतुर्दशवें अध्याय में गुह्यक तथा देवकन्याओं के रास का वर्णन है। दिव्य गीत श्रवणकार अपनी शक्तियों सहित त्रिदेवों का मूर्छित

होना, काम का मूर्छित होना, राम रास दर्शनार्थ आते समय शचीदेवी को इन्द्र का रोकना, तथा उनका न रुकना, हठात रास में आना, देवगुरु का देवताओं को समझाना, कुछ समय बाद देवताओं का अपनी देवियों को बुला ले जाना, प्रीतम का दिव्य सखियों को प्रगट करना। यक्ष कन्यायों के साथ श्रीराम जी को रास करते देखकर मुनियों का स्त्री बनकर श्रीराम जी के साथ रास करने की रुचि प्रकट करना, श्री अवध की ग्रामबधुओं का बसन्तोत्सव देखकर आकर्षित होकर आना।

पंचदशवें अध्याय में नाग कन्यायो के रास का प्रसंग है, सखियों का विमोहित होकर परस्पर में काम क्रीड़ा करना, श्री सरजू जी में जलविहार, प्रीतम की अनुसंधान लीला, सखियों को साकेत धाम का दर्शन होना, अनन्त ऐश्वर्य देखकर सखियो का भयभीत होना तथा प्रीतम का समझाना, प्रीतम का सखियों को अपने घर जाने का आदेश देना जिसे सुनकर सखियों का मूर्छित होकर गिरना, प्रिया प्रीतम का दुलार पूर्वक समझाकर स्वस्थ करना, सखियों का प्रणय कोप करना, पुनः प्रीतम का सखियों को समझाना, श्री सूत जी का शौनकादिक ऋषियों को अपना सिद्धान्त बताना। शौनकादिक ऋषियों का श्री सूत जी का पूजन सत्कार करके प्रार्थना करना।।

जिन महतजनों ने ग्रन्थ अवलोकन कर अपनी सम्मति रूप में कुछ पंक्तियां लिखने की कृपा की है, उन सभी गुरुजनों का यह बालक आभारी है।

भावुक जनों का अनुगामी—

सीताशरण

श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मंडल, श्री रामकोट

श्री अवध धाम (उ० प्र०)

।। विषय अनुक्रमणिका ।।

विषय पृ० सं०

पंचदशोऽध्यायः

विषय पृ० सं०

श्री श्री १००८ श्री स्वामी मैथिली रमण शरण जी महाराज की शुभ-

सम्मति

अनन्त करुणावरुणालय, भक्तवत्सल, कृपा, क्षमा, दया, सुख रस सागर भगवान् श्रीसीतारामजी की असीम अनुकम्पा से भावुकों के आग्रह पर श्री स्वामी सीताशरणजी ने श्रीमद्व्यासजी कृत श्री कोशल खंड का छन्दानुवाद करके भावुक जगत का बहुत उपकार किया है।

मूल ग्रन्थ केवल संस्कृतज्ञों को ही सुखद था, भाषा में छन्दानुवाद होने पर सर्व सुलभ हो गया, तथापि साहित्यिक भावुकों को ही विशेष रस प्राप्त होगा, क्योंकि भाषा छन्द होने पर भी अनुप्रास अलंकारों की भरमार होने से सर्व-साधारण को कुछ कठिनाई पड़ेगी तथापि भावुक प्रेमियों को पाठ या श्रवण कर विशेष लाभ होगा।

अतः इस 'युगल रहस्य माधुरी' के पठन पाठन से रसिकों को विशेष रस मिले, हमारी यह शुभ-कामना है।

म० मैथिली रमण शरण
श्री जानकीघाट बड़ा स्थान
श्री अवध धाम
(उ०प्र०)

❋ त्रयोदशोऽध्यायः ❋

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

❋ तुलार्के राजकन्या रास प्रकरणम् ❋

छन्द रोला:–

पुनि जब श्री रबिदेव तुलारासी पर आये।
लाग्यो कार्तिक मास दिवस अति लगत सुहाये ॥ १ ॥
तब निज रूप गुणादि शील सौन्दर्य बिबश कर।
विश्व रमयिता राम परम अभिराम मोद घर ॥ २ ॥
रूपौदार्य अपार गुणाकर शील सिन्धु वर।
धीरोदात्त महान नवल नायक विनोद घर ॥ ३ ॥
सब लच्छण सम्पन्न मैथिली हृदय हार पिय।
निशि विलास रस मगन प्रेम लम्पट उदार हिय ॥ ४ ॥
श्री रघुराजकिशोर चतुरचूड़ामणि छवि धर।
अंग कान्ति कमनीय सच्चिदानन्द मधुर तर ॥ ५ ॥
कार्तिक केर बिहार चहत प्रारम्भ करन जब।
लखि रबि शशि उर माहिं परम आमर्ष बढ़ेउ तब ॥ ६ ॥
राम प्रताप विलोकि कियो रबि हृदय बिचारा।
क्या रघुवीर प्रताप सरिस नहिं तेज हमारा ॥ ७ ॥
मुख मयंक अवलोकि चन्द्र यों कहा सुनाई।
क्या रघुवर मुख चन्द्र छटा मोसे अधिकाई ॥ ८ ॥

तब सब ने यों कहा तुला पर लेहु तुलाई।
को भारी को हरुअ प्रगट आपै हो जाई ॥ ६ ॥
एक तुला पर राजि गये रघुवर हर्षाई।
इक दिशि बैठे चन्द्र सूर्य मन मोद बढ़ाई ॥१०॥
राम तुला रहि गई भूमि रबि शशि नभ माहीं।
अतिहि हरुअ उठि गये बहुरि आये छिति नाहीं ॥११॥
शशि अति ऊपर गयो हृदय में परम लजाई।
दच्छिणायन भे भानु मार्ग तजि चला पराई ॥१२॥
पुनि कृतिका का चन्द्र लसत चित्रा सम तूला।
पुरुष विलासिन केर भोग सुख के अनुकूला ॥१३॥
ना अति शीत न घाम चैत्र कार्तिक दोउ मासा।
भोगेच्छुक नर नारि हृदय को देत हुलासा ॥१४॥
लखि कृतिका की रैन चयन प्रद अति मनहारी।
श्री रघुराज किशोर राज कन्यन सुकुमारी ॥१५॥
विधु बदनी मृग नयनि परम रमणी छवि रूपा।
पिय हिय को सुख दानि सकल मन हरनि अनूपा ॥१६॥
तिनको आयसु दई मुदित रसिकेश उदारा।
रुचि अनुकूल विहार करो सब विविधि प्रकारा ॥१७॥
निशि अति सुखद पुनीत चन्द्र चन्द्रिका सुहावन।
छिटकि रही चहुँ ओर हृदय में रस उपजावन ॥१८॥
लखि पिय की रुख सकल नवल नायिका नवीनी।
परमानन्द समाय मजन के रति रस भीनी ॥१९॥

रंग भूमि अति विशद विपुल बिस्तार सुहावन।
तहँ पर कियो प्रवेश सकल ललना मन भावन ॥२०॥
मन्द–मन्द मुसुकान सबनि की अति सुखदाई।
निरखत मन अस लगत मनहुँ शशि किरन सुहाई ॥२१॥
अथवा पिय मन हरन हेत मन्मथ निज माया।
दिखलाई रघुवरहिं सर्वथा चित्त रमाया ॥२२॥
या निज माया जाल शम्बरासुर फैलाई।
नव नायक रसिकेश चित्त को रहीं रमाई ॥२३॥
नव नागरि समुदाय नवल पटभूषण धारी।
प्रीतम प्रीति प्रतीति पगीं पिय पर बलिहारी ॥२४॥
मृगी सदृश प्रिय नयन चयन प्रद विकशित सोहैं।
शोभित कर्ण सु फूल कान में पिय मन मोहैं ॥२५॥
सु दृग चपल चित चोर चतुर चितवनि सुखकारी।
लगि पिय के हिय रमण करन की चाह अपारी ॥२६॥
परम शरण्य उदार श्याम सुन्दर रघुनन्दन।
प्रेमिन प्राणाधार प्रीति पालक जगवन्दन ॥२७॥
तिन के प्राप्ति सु करन केर विद्या जनु सोहत।
रूप भार से भरीं सकल बनिता मन मोहत ॥२८॥
सब तरुणी समुदाय पिया मुख कंज सु भ्रमरी।
निरखैं भरी सनेह शील शोभा गुण अगरी ॥२९॥
बहु बिधि विरचि विभाग परस्पर बिपुल कुमारी।
कमल कन्द सम मन्द हँसत पिय रास बिहारी ॥३०॥

तिनके आगे खड़ीं सकल नृत्यैं अरु गावहिं ।
स्वर अरु ताल समेत बिबिधि बिधि बाद्य बजावहिं ॥३१॥
मृदु मुसुकाय नचाय दृगन सुन्दर पिक बैनी ।
गावहिं राग रसाल परम मनहर सुख दैनी ॥३२॥
पिय गुण शील स्वभाव रूप की बिपुल बड़ाई ।
करैं सखी समुदाय हृदय में अति सुख पाई ॥३३॥
तब सबके चित चोर चपल मन हरण रसिक वर ।
बिपुलरत्न मणि हार किये धारण विनोद घर ॥३४॥
श्री मिथिलाधिप लली केर इच्छा रजु बँध कर ।
उठे रसिक शिर मौर राजनन्दन उदार तर ॥३५॥
यद्यपि परम स्वतन्त्र सकल प्रेरक जग स्वामी ।
अखिलेश्वर जगदीश कृपा निधि अन्तर यामी ॥३६॥
तदपि मैथिली प्रीति पगे बनि अति परतन्त्रा ।
बहु बिधि करत बिहार यथा घूमै कोइ यन्त्रा ॥३७॥
यद्यपि कोटि मनोज मान मद मर्दन हारे ।
रूप अनूप उदार परम सुन्दर सुकुमारे ॥३८॥
गान कला कमनीय परम पंडित सब भाँती ।
लाजत लखि गन्धर्व अपर उपमा न लखाती ॥३९॥
जो सबको चित चोरि स्ववश करि रमत रमावत ।
करि बहु केलि कलोल स्वजन हिय रस उपजावत ॥४०॥
सखियन मण्डल माहिं मुदित मन किये प्रवेशा ।
नृप कुमार सुकुमार अलिन मन हरण रसेशा ॥४१॥

होन लगेउ जब रास वेग वाको बाढ़ो अति ।
तब शिशु मारहु चक्र रुक गयो तजि अपनी गति ॥४२॥
कारण सकल नछत्र निरखि श्रीराम रास रस ।
आनँद मुर्छित भयो चित्त गति रही न निज बस ॥४३॥
तेहि छण सब संसार रास रस मगन मुदित मन ।
योग दशा को प्राप्त भयो बिसराय सुरति तन ॥४४॥
जड़वत जगत दिखात देह को भान न काहू ।
को कवि "सीताशरण" कहै तेहि रास उछाहू ॥४५॥
सब की लगी समाधि न कोई लखत बियोगी ।
बिषयी कोउ न दिखात लखावत नहिं कोइ रोगी ॥४६॥
रासस्थली अनूप चन्द्रमणि रचित हजारन ।
बने ललित स्तम्भ परम सुन्दर मन हारन ॥४७॥
विबिधि सुमन कृत माल लगीं शोभित सुखदाई ।
उड़त सुगन्ध झकोर भ्रमर गुंजत हर्षाई ॥४८॥
मणिमय ललित प्रकाशमान आकाश दीप वर ।
जगमग जगमग ज्योतिजगत नहिं तिमिर रंच भर ॥४९॥
कालागरू सु धूप दियो तेहि धूम्र अपारा ।
छायो भू आकाश माहिं जनुभा अँधियारा ॥५०॥
आच्छादित शशि कियो दिखाई परत न तारा ।
वीणा वेणु मृदंग बजत वर वाद्य अपारा ॥५१॥
तिन में रत्न सु गुच्छ लगे अति लगत सुहावन ।
सुन्दर जालीदार झरोखा प्रिय मन भावन ॥५२॥

कृत्रिम मणिमय विटप स्वर्ण कृत सुमन सजाये।
कृत्रिम सुमन सु माल विपुल चित लेत चुराये ॥५३॥
औरौ सौज अनेक भाँति सखियन सजवाई।
अतिसय शोभायुक्त परम सुन्दर सुखदाई ॥५४॥
रासस्थली मझार लगे जो रत्न दीप वर।
तिन को विमल प्रकाश सुखद सुन्दर अनूप तर ॥५५॥
ऐसे मालुम परत मनहुँ यह दीप स्वर्ग कर।
मण्डप अतिसय उच्च प्रभा छिटकत विशेष वर ॥५६॥
सोई प्रवल प्रकाश प्रकाशित दश दिशि माहीं।
अन्तरिच्छ आकाश भूमि तिहुँ पुर तम नाहीं ॥५७॥
तेहि प्रकाश में लखत राम रमणिन मुख कंजा।
बिपुल सु मोतिनमाल माहिं सुन्दर सुखपुंजा ॥५८॥
मानहु पंकज माहिं और चन्द्रमा मझारी।
पड़े सुधा वर बिन्दु देत अद्भुत छबि भारी ॥५९॥
सखियन के मुख कंज यही चन्द्रमा कमल वर।
चहुँदिशि मोती लसत अमित जनु बिन्दु सुधाकर ॥६०॥
आतमवादी बिपुल तत्व दर्शी मुनि बृन्दा।
जो तजि बिषय विकार अनुभवत ब्रह्मानन्दा ॥६१॥
तिन सबने मैथिली काहिं ईश्वरी राम की।
रास और सुख केर ईश्वरी कृपा धाम की ॥६२॥
माना निज मन माहिं बिपुल बिधि कीन बड़ाई।
श्री मैथिली समान सकृत मैथिली लखाई ॥६३॥

रास केर आनन्द विशद बाहुल्य हृदय हर।
पिया अंग आलिंगनादि चुम्बन सुस्वाद वर।।६४।।
उरधरि श्री मैथिली उठीं अतिसय हर्षाई।
लाज सकोच बिहाय लगीं पिय हिय मुसुकाई।।६५।।
पिय अंशन भुज धारि प्यार सों कण्ठ लगाई।
सो छबि "सीताशरण" रही हिय में उमगाई।६६।।
तेहि छण शोभित मुख मयंक मुक्ता सुफलन युत।
बिम्बा सम अति अमलप्रकाशित अनुपम अद्भुत।।६७।।
पृष्ट भाग पर लसति सु वेणी परम सुहावन।
मनहुँ मल्लिका लता स्वर्ग की अति मनभावन।।६८।।
गूंथे वेणी माहिं स्वर्ग मल्लिका सुमन वर।
याते वाही सदृश लगै वेणी विशेष कर।।६९।।
स्वर्ण रचित जरतार केर सारी तन धारे।
ललित नितम्ब महान हेम, रम्भा अनुहारे।।७०।।
प्रीतम प्राण अधार श्रेष्ठ मुक्तन कृत माला।
बिपुल रत्नमणि जटित किये धारण छबि जाला।।७१।।
स्वेताम्बर तन माहिं किये धारण रासेशवर।
नील सुमणि सम लसत अंग अनुपम प्रकाश कर।।७२।।
स्वेत सु मोतिन केर क्रीट धारे शिर माहीं।
छिटकत दिव्य प्रकाश जासु उपमा कछु नाहीं।।७३।
स्वेत सु मणि कृत लसैं ललित कुण्डल मन हारी।
चूमत "सीताशरण" कपोलन प्रिय छबिकारी।।७४।।

उर में रत्न सु जटित स्वेत मणिमाल सुहावत ।
बनमाला मालती लता इमि अति छबि पावत ॥७५॥
अति लम्बी सुठि जानु तलक लहरत प्रिय लागै ।
जो निरखै बिन मोल बिकै प्रेमामृत पागै ॥७६॥
इमि साजे श्रृंगार नवल दम्पति रस माते ।
छके परस्पर प्रेम मन्द हँसि हिय लपटाते ॥७७॥
निरखत भरि अनुराग परस्पर पान पवाई ।
उमगत दोउ को प्रेम प्यास पल पल अधिकाई ॥७८॥
पिय प्यारी रस सिन्धु युगल अति सुषमागारा ।
शोभितपगे सनेह लहत रस स्वाद अपारा ॥७९॥
दृष्टि दोष जनि लगै परस्पर दोउ सकुचाई ।
निरखत छबि माधुरी लखे बिन रहा न जाई ॥८०॥
राई लोन उतारि आरती करत परस्पर ।
हर्षि चलावत चँवर व्यजन ढोरत प्रमोद भर ॥८१॥
सकल नायिकन माहिं नायिका माननीय वर ।
तिनहूँ के सौभाग्य केर सीमा उदार तर ॥८२॥
श्री मिथिलाधिपलली मैथिली रूप उजारी ।
शील सनेह निधान कृपामयि गुणन अगारी ॥८३॥
पिय सँग आसन माहिं लसैं नहिं सिय तजि कोइ तिय ।
पूज्य सु गुरुजन वृन्द शास्त्र दीक्षित जानहु जिय ॥८४॥
सिय सब कला प्रवीण सकल विद्या सम्पन्ना ।
पिय की जीवन मूरि मैथिली महि उत्पन्ना ॥८५॥

क्षमा मयी मृदु मूर्ति मधुर मंजुल मन हरनी।
"सीताशरण" सनेह सनी आश्रित हित करनी।८६॥
पिय प्यारी को निरखि सकल नायिका मोद भर।
गावहिं गीत रसाल मधुर मनहरन उमगि उर।८७॥
तिनके प्रिय संगीत सुधामृत पी दोउ छवि धर।
लहतपरम सन्तोष प्रशंसा करत भूरि तर॥८८॥
कबहूँ बोलत कान माहिं लगि युगल रसिक वर।
गोप्य मन्त्र कछु कहत निरखि भ्रम होत सखिन उर॥८९॥
सोचत सब मन माहिं वदत क्या प्रीतम प्यारी।
येहि विधि करत विनोद मोद मन्दिर सुखकारी॥९०॥
प्रीतम परम प्रसन्न प्रेम पगि प्रिय एक वामा।
लीनी निकट बुलाय कान लगि मन अभिरामा॥९१॥
बोलत कछु मृदुबात सुमन की माल निकारी।
निज गर से रसिकेश वाहि पहिराय सुखारी॥९२॥
पुनि तेहि निज भ्रू केर इशारे रास मझारी।
लाये नृपति किशोर सुछबि धर रास बिहारी॥९३॥
विल्व सुफल सम तासु पयदनृत्यति सो आली।
प्रीतम तोरत तान बजावत प्रमुदित ताली॥९४॥
हँसि निज भौंह नचाय देत वाको आनन्दा।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया सुखकन्दा॥९५॥
कोइ मृगनयनी वाल हर्षि तेहि कर्ण मझारी।
स्वकर बाँधि ताटंक लहत रस रास बिहारी॥९६॥

कोइ शुभ नयनी वाम तासु मस्तक पर प्रमुदित ।
दे देवत वर विन्दु परम सुन्दर अति अद्भुत् । ९७॥
ऐसे ही केहु सखी काहिं भूषण पहिराई ।
बिलसत सुन्दर श्याम राजनन्दन सुख पाई ॥९८॥
कर्ण पर्यन्त विशाल नयन वाली कोइ नारी ।
मृदु हँसि निकट बुलाय तासु कर गहत सुखारी ॥९९॥
तेहि नाशापुट माहिं मुदित मोती पहिरावत ।
"सीताशरण" बिलोकि सु छबि सो हिय हर्षावत ॥१००॥

दो०—केहु सखि के शुभ गुण निरखि, प्रीतम हिय हर्षाय ।
"सीताशरण" प्रसन्न हो, वाको निकट बुलाय ॥ १ ॥

ताके ललित नितम्ब माहिं प्रिय मृदु स्वर करनी ।
पहिरावत घंटिकाक्षुद्र श्रवणन रस भरनी ॥ १ ॥
कोइ मन हरनी वाम परम अभिराम ललामा ।
लखि तेहि को वर नृत्य सु गुण प्रमुदित सुखधामा ॥ २ ॥
अति प्रसन्नता युक्त वाहि हँसि कण्ठ लगाई ।
करि अधरामृत पान तासु मन मोद बढ़ाई ॥ ३ ॥
केहु सखि को अवलोकि सु प्रिय वेणी में हँसि हँसि ।
गूंथत सुठि मालती सुमन रचि रचि अति गसि गसि ॥४॥
पुनि वाके सँग काम केलि करि मल्ल सरिस बन ।
बिलसत विविधि प्रकार रास रसिया उदार मन ॥ ५ ॥
काम केलि कल कुशल लड़त तेहि से सिय प्यारे ।
लखि सो क्रीड़ा कलित काम सकुचात अपारे ॥ ६ ॥

सुन्दर सुखद सुजान परम दक्षिण नायक वर।
कामिनि हिय अभिराम महा छवि धाम सरस तर ॥ ७ ॥
कोइ कामाकुल वाम परम उत्तम अति रमनी।
पिय को अति सुख दानि हृदय में रति रस भरनी ॥ ८ ॥
वाके कुच को पकरि करत मर्दन रसिकेश्वर।
"सीताशरण" नरेश सुवन छवि निधि हृदयेश्वर ॥ ९ ॥
प्रिय किशोर मुक्तादि रचित सारी अति मन हर।
केहु सखि को हर्षाय मुदित पहिरावत सुख कर ॥१०॥
केहु सखि के प्रिय ललित कन्ध पर दुपटा सुन्दर।
धारण करि निज हाथ मन्द मुसुकात रसिक वर ॥११॥
काहू के सब भाँति होत अति वशीभूत पिय।
लखि वाकी रुचि बाँधि चरण में नूपुर सुठि हिय ॥१२॥
परम बिलासी बने तासु कर पकरि दुलारे।
नृत्यत प्राण अधार राजनन्दन सुकुमारे ॥१३॥
काहू सखि को स्वकर कमल लोचन सिय प्यारे।
सर्वात्मा अखिलेश अनघ शुचि परम सुखारे ॥१४॥
अतिसय कामुक बने पान मादक करवावत।
पुनि तेहि हँसि अनुराग सहित निज कण्ठ लगावत ॥१५॥
केहु सखि काहिं उठाय युगल भुज पकरि स्ववश कर।
हिय सों हृदय लगाय दबावत वाहि अधिक तर ॥१६॥
तब वह पीड़ित होति हृदय में अति घबराई।
बोलति हे हृदयेश प्राण वल्लभ सुखदाई ॥१७॥

यह कैसी रसरीति प्राण मन मोहि बताइय।
दाबे देवत मारि कृपा करि प्यार जनाइय ॥१८॥
सुनि वाके प्रिय वचन मन्द हँसि अधिक दबाये।
तब वाने रिसियाय स्वनख हिय माहिं गड़ाये ॥१९॥
तेहि रासस्थल मध्य पिया की अलकैं कारी।
दोउ अस्कन्धन माहिं रहीं लहरत घुँघरारी ॥२०॥
अति चन्चल हो रहीं सखिन मन मोद बढ़ावत।
सखि नखक्षत जब कीन प्राण जीवन हर्षावत ॥२१॥
रतिरस बर्द्धन हेतु राजनन्दन उदार तर।
ऐसी लीला करत हृदय में अति उमंग भर ॥२२॥
कबहूँ केहु सखि केर सु रुचि लखि राजकिशोरा।
मणिमय नूपुर बाँधि चरण मधि प्रेम विभोरा ॥२३॥
नृत्यत वाके साथ बिबिधि गति अति विचित्र वर।
प्रगटत "सीताशरण" प्राण वल्लभ सुजान तर ॥२४॥
रस नायक रमणीय परम कमनीय सुघर वर।
येहि बिधि लीला करत नवल नित हिय उमंगभर ॥२५॥
कदा काहु प्रिय सखी केर कोमल सु कण्ठ कृत।
सुनत सरस वर गान राजनन्दन सनेह युत ॥२६॥
पुनि वाके सुर माहिं आपने स्वरहिं मिलाई।
गावत रसिक नरेश प्राण वल्लभ हर्षाई ॥२७॥
कण्ठ और उर माहिं बिबिधि मणि रत्न सु माला।
अति शोभा संयुक्त किये धारण छवि जाला ॥२८॥

सकल अंग कमनीय उचित वर भूषण धारे।
परम प्रकाश स्वरूप निरखि मन मोहन हारे ॥२९॥
काहू सखि से मिलत हृदय लगि जब हर्षाई।
सो कछु कारण लागि करति निन्दा झुँझलाई ॥३०॥
सो वर विमल चरित्र देखि सब सखि रस पागीं।
प्रीतम रूप अनूप सुधा पीवैं अनुरागी ॥३१॥
अति लीला संयुक्त सकल सखि तेहि सखि काहीं।
निरखैं सहित सनेह तासु वर भाग्य सराहीं ॥३२॥
कबहूँ केहु नायिका काहिं पिय वाक्य हास्य युत।
कहत चपल चितचोर चतुर चूड़ामणि अद्भुत ॥३३॥
तेहि सखि काहिं हँसाय हँसत आपहु रघुराई।
पोषक प्रिय परिवार प्रेम पालक सुख दाई ॥३४॥
जामें परिकर निकर लहैं अतिसय आनन्दा।
सोई कृत मन मुदित करत सन्तत रघुनन्दा ॥३५॥
एक तो नृपति किशोर द्वितिय पुनि परम प्यार सों।
पालो प्रिय परिवार इन्हैं अतिसय दुलार सों ॥३६॥
तब न करैं प्रतिपाल आन रुचि को क्यों छवि धर।
जानत प्रीति सु रीति भली विधि राजकुँवर वर ॥३७॥
रस लोलुप रसिकेश प्रिया संग सकल सखिन युत।
बूझत प्रहेलिकान कूट करि करि अति अद्भुत ॥३८॥
केहु सखि के दृग मूदि अपर सखि देत छिपाई।
पुनि वाके दृग खोलि कहत वहि खोजहु जाई ॥३९॥

कबहुँ परस्पर करत मोद युत कन्दुक लीला।
खेलत चौसर आदि कबहुँ वर खेल रसीला ॥४०॥
रस लोलुप रघुवीर सखिन रस स्वाद कराई।
आपहु करि रसस्वाद हृदय में अति हर्षाई ॥४१॥
कबहूँ भरि अनुराग सखिन को सुठि सुगन्ध वर।
स्वकर करावत घ्राण रसिक वल्लभ सुजान तर ॥४२॥
पुनि सुचि सरस सुगन्ध अनुत्तम सखियन कर से।
करत स्वयंभी ग्रहण रास रसिया सुख बरसे ॥४३॥
वर्णत श्रीमद्भूत अहो आश्चर्य महाना।
पूर्ण ब्रह्म परमांश कृपा निधि परम सुजाना ॥४४॥
होकर भी श्रीराम अनेकन तियन रमाई।
इन्द्रिय लोलुप बने रमत तिन सँग सुखपाई ॥४५॥
कोटिन सखिन रमाय रमत सब के सँग रघुवर।
तदपि तृप्ति नहिं लहत हृयद में रूप रसिक वर ॥४६॥
सब बिधु बदनी बाल परम रमणी मृगनयनी।
रूप शील गुण खानि सरस अति प्रिय पिक बयनी ॥४७॥
मानत तदपि न तृप्ति मधुर रस की बलिहारी।
पूर्ण ब्रह्म रस रूप त्रपित यह अचरज भारी ॥४८॥
पूर्वोक्त बहु भाँति करत क्रीड़ा नृपनन्दन।
बनि अतिसय आशक्त मुदित विहरत जग वन्दन ॥४९॥
करत सखिन के संग चरित अति सुखद मधुर तर।
देत लेत सुख स्वाद बिके तिन के कर छवि धर ॥५०॥

देखि चरित्र विचित्र शान्ति मयि मूर्ति सरस चित ।
सर्व दोष से शून्य पतिव्रत निरत रहति नित ॥५१॥
प्रीतम प्राण अधार प्रिया सब विधि समर्थ वर ।
निज पर में सम भाव भरी भूषित सनेह वर ॥५२॥
परहित निरत विनोद सु प्रिय परिपूर्ण सकल विधि ।
चाहैं कृपा कटाक्ष हाथ जोरे सब ऋधि सिधि ॥५३॥
श्री मैथिली उदार मंज मूरति पिय की प्रिय ।
निरखि परम आशक्त प्रीतमहिं तब सिय के हिय ॥५४॥
बाढ़उ अति आमर्ष लखा पिय मनो खिलौना ।
सब सखि रहीं खिलाय मुदित खेलत नृप छौना ॥५५॥
जैसे कोई मृगा संग खेलै सुख पाई ।
तिमि सब सखि पिय संग मुदित खेलैं हर्षाई ॥५६॥
यद्यपि परम समर्थ चहैं करि देयं निवारन ।
अवसि जायँ पिय मानि तदपि कछु कहैं न कारन ॥५७॥
उर में करि अति मान विपिन में गईं दुराई ।
कृपामयी पर कार्य निरत सो क्यों रिसियाई ॥५८॥
यदि कोइ शंका करै तासु यह समाधान वर ।
जहाँ प्रेम अति होत तहाँ आमर्ष अवस कर ॥५९॥
अति टेढ़ी गति प्रेम केर कोइ प्रेमी जानै ।
जाके हिय नहिं प्रेम होय सो क्या पहिचानै ॥६०॥
अधिक प्रेम जहँ होय प्रणय तहँ अवसहिं होई ।
सर्प सदृश गति कुटिल प्रेम की जानै कोई ॥६१॥

बिना प्रणय के प्रेम पुष्टि को पावत नाहीं।
पिय के प्रति अति प्रेम अहै स्वामिनि मन माहीं ॥६२॥
अतिसय मधुर सनेह वती श्री राजकिशोरी।
बढ़त प्रणय को रंग होत जब प्रेम विभोरी ॥६३॥
तब सब गुण दबि जात प्रणय केवल रहि जावत।
याते बहु गुण होत प्रणय भी शोभा पावत ॥६४॥
यद्यपि श्री मैथिली माहिं शुभ गुण सब आहीं।
तदपि प्रेम वश प्रणय मान होवत मनमाहीं ॥६५॥
जो अतिसय गुणवती प्रिया सो अवसहिं माना।
निज वल्लभ सों करै नायिका परम सुजाना ॥६६॥
कारण एही बिशेष प्रथम ज्यों जनक दुलारी।
जात न जानी सखिन न जाने रास बिहारी ॥६७॥
प्यारी बिना विशेष विकल भै नृपति कुमारा।
जहँ तहँ खोजत फिरत विपिन में भरि उद्गारा ॥६८॥
जब पिय भये अदृश्य सकल सखि हिय अकुलाई।
निज मन करैं बिचार हमहिं तजि सिय रघुराई ॥६९॥
ना जाने कहँ गये प्राण आधार हमारे।
श्री मैथिली समेत राजनन्दन सुकुमारे ॥७०॥
अतिश्रम करि सब सखी लगीं खोजन बन माहीं।
गावत युगल किशोर गुणन गाथा पछिताहीं ॥७१॥
इमि दशमी की रैनि विपिन में सखिन बिताई।
आई प्रातःकाल सु एकादशी सुहाई ॥७२॥

प्रबोधिनी तेहि नाम सकल सखियन व्रत कीना ।
प्रिय प्यारी की प्राप्ति हेत हरि पद चित दीना ।७३।।
प्रिय आँवला सु विटप ताहि तर विधिवत पूजा ।
श्री हरि को सब करत रहीं कारज नहिं दूजा ।।७४।।
निशि में चुनि बहु सुमन ललित मण्डप मनहारी ।
विरचेउ सहित सनेह सखिन अद्भुत सुख कारी ।७५।।
तामधि रमासमेत रमा पति को पधराई ।
नृत्यैं भरि अनुराग उच्च स्वर गाय बजाई ।।७६।।
तदपि विरह की आर्त दशा निःसीम अपारा ।
अनुछन बढ़ती जाय सखिन के हृदय मझारा ।७७।।
येहि बिधि जगती रहीं रात्रि भर सब मृग नयनी ।
गावत गीत रसाल मधुर तर मिलि पिक वयनी ।।७८।।
जब अति आरत हृदय एकादशि व्रत विधिवत करि ।
श्रीहरि पूजन कीन रमायुत अति उमंग भरि ।।७९।।
तब तेहि पुण्य प्रभाव उसी मण्डप में मन हर ।
श्रीहरि रमा सुमूर्ति माहिं देखे दोउ छविधर ।८०।।
प्राण सजीवन मूरि प्रिया युत नवल छयल वर ।
प्रकटे रसिक नरेश राजनन्दन उदार तर ।।८१।।
लखि दृगभरि छबि सिन्धु युगल सब सखी सयानी ।
गये प्राण पुनि मिले देह जैसे सुख मानी ।८२।।
तैसे हर्षित भईं लहैं सब परमानन्दा ।
प्राण प्रिया युत निरखि दृगन भरि प्रिय सुख कन्दा ।।८३।।

अब तक सब सखि रहीं प्राण बिन मानहुँ देही।
तब अति प्रमुदित भईं मिले जब युगल सनेही ॥८४॥
निज स्वामिनि मैथिली केर हम सब अपमाना।
कीनों यासे युगल रसिक भय अन्तरध्याना ॥८५॥
पुनि प्रत्यक्ष बिलोकि सकल गौराङ्गी वामा।
रोमांचित तन भईं बहैं दृग अश्रु ललामा ॥८६॥
तब सब मिलि पद वन्दि कीन अस्तुति कर जोरी।
राजहिं परम प्रसन्न पियायुत राज किशोरी ॥८७॥
सबने सहित सनेह कीन पूजा बहु भाँती।
पाय दोउन को प्यार भई तब शीतल छाती ॥८८॥
प्रीति सु रीति समेत विविधि मेवा पकवाना।
भोजन अमित प्रकार करायो सुधा समाना ॥८९॥
तत्पश्चात सनेह सहित सब मिलि एक संगा।
पावैं युगल प्रसाद रँगीं हिय अति रस रंगा ॥९०॥
दीपमालिका केर कीन उत्सव हर्षाई।
लागीं करन विलास हास रस पुनि सुख पाई ॥९१॥
सोचहिं निज मन माहि सकल मम भाग्य केर फल।
बीतत निशि अरु दिवस लखत पिय प्यारि केलि कल ॥९२॥
वर्णत सूत सुजान यही विधि प्रीतम प्यारी।
कीनी कार्तिक मास माहिं लीला मन हारी ॥९३॥
जेहि लीला सम तुल्य जगत् में अपर न लीला।
मनोरमा अति ललित मधुर तर अति सुख शीला ॥९४॥

वर्णीश्री मद्‌व्यास देव उनकी वर बानी।
तिन की कृपा प्रसाद हमारे कर्ण समानी ॥९५॥
सोइ मै धारण कीन शुद्ध हिय परम रसामृत।
दीनो तुमहिं पियाय सोई लीलामृत अद्भुत ॥९६॥
अब हे शौनक आदि सकल मुनि वर विज्ञानी।
सुनिये हिम ऋतु केर ललित लीला रस सानी ॥९७॥
हिम ऋतु में अतिशीत भीत लखि प्रीतम प्यारी।
तुला राशि से वृश्चिक राशि पर गये तमारी ॥९८॥
जगत प्रकाशक भानु देव भी निरखि शीत अति।
क्या हिय में भय खाय त्यागि दीनी अपनी गति ॥९९॥
पुनि जब नवल किशोर रसिक मणि राम उदारा।
निरखीं "सीताशरण" निशा अतिसय बिस्तारा ॥१००॥

दो०—अन्य तियन ते अति निपुन, साध्य सुता सुख दानि।
तिन को लखि "सीताशरण", बोले कृपा निधान ॥ २ ॥

हे सब साध्य कुमारि सुनो मेरी प्रिय बानी।
अब तुम सब मिलि करो रास अद्भुत रस सानी ॥ १ ॥
मैंने कियो विचार प्रथम ही निज मन माहीं।
लघुनिशि में तुम सबनि केर लीला भल नाहीं ॥ २ ॥
अब आईं बड़ि रात अस्तु तुम सब निज लीला।
दिखलावहु सब भाँति मधुर मन हरन रसीला ॥ ३ ॥
सङ्गीतामृत जन्म दान रघुवर इमि बोले।
श्रवण सुधा सम सरस मधुर प्रिय बचन अमोले ॥ ४ ॥

सुनि पिय के वर वचन रचन सुन्दर मन भावन।
साध्य सुता समुदाय कहैं प्रिय वयन सुहावन ॥ ५ ॥

❀ वृश्चिकार्के साध्य सुता रास प्रकरणम् ❀

हे नरचन्द्र उदार सिद्धता हम में नाहीं।
हम सब साध्या अहैं आप जानिय मन माहीं ॥ ६ ॥
सो हम सब नागरी मनोरथ पूर्ण तिहारे।
करैं कवन विधि नाथ बताइय राज दुलारे। ७ ॥
जो शिवहू ते अधिक सर्व विद्या गुण सागर।
सकल कला कल कुशल प्रम रस निधि नव नागर। ८ ॥
को अस जग में नारि अहै समरथ हे प्यारे।
निज गुण से संतोषि तुमहिं करि परम सुखारे ॥ ९ ॥
करवावें रस स्वाद आप को हे सुन्दर वर।
सकृत भरोसा हमें यही है परम सु छवि धर ॥१०॥
तीव्र भक्ति से आप शीघ्र रीझत हे स्वामी।
किये कोटि चातुरी द्रवौ नहिं अन्तरयामी ॥११॥
अथवा गुण गण सकल विपुल विद्या समुदाई।
तेहि ते होत प्रसन्न आप नहिं हे रघुराई ॥१२॥
फिर भी आज्ञा नाथ आप की शीश हमारे।
जैसी तव रुचि अहैं करैं हम परम सुखारे ॥१३॥
तुम्हरी कृपा प्रसाद हमनि ने कृपा निधाना।
जस पाई संगीत कला हे परम सुजाना ॥१४॥
अर्पण करिहैं अवसि आप को हे रासेश्वर।
कीजिय गा स्वीकार प्रेम से हे हृदयेश्वर ॥१५॥

वर्णत सूत सुजान बचन यहि बिधि कहि पिय से ।
रासस्थली मझार सकल आईं हँसि हिय से ॥१६॥
रहित समस्त बिकार चेष्टा परम अमृत मय ।
चारु पवित्र सुदेह चरित शृंगार सु रस मय ॥१७॥
काम वाण से व्यथित सकल पिय रूप निहारी ।
सोचैं सब मन माहिं कण्ठलगि रास बिहारी ॥१८॥
कब देहहैं सुख स्वाद आपने हृदय लगाई ।
परमानन्द समेत अधर रस दिहैं चखाई ॥१९॥
इमि मन माहिं बिचारि अंग सब के पुलकावैं ।
मिलि कर सखि समुदाय पिया को शीश झुकावैं ॥२०॥
नमस्कार करि पियै राग मल्लार मझारी ।
कियो मङ्गलाचरण सखिन आरम्भ सुखारी ॥२१।
वंशी मधुर मृदंग सरस संगीत गान वर ।
प्रिय मंजीर ललाम शब्द अति कर्षक चित कर ॥२२॥
मदनहुँ के मद मथन मधुर तर ललित गीत वर ।
गावहिं नन्दीराग हृदय में अति उमंग भर ॥२३॥
कामहुँ को वश करन हेत ये मन हर वाला ।
तोरहिं तान अनूप सुखद प्रिय मधुर रसाला ॥२४॥
यद्यपि प्रथम अपूर्व भये बहु रास सुहावन ।
परम विचित्र प्रकार एक ते इक मन भावन ॥२५॥
तदपि जनेश कुमार केर यह रास अधिक तर ।
सकल प्रकार अपार प्रेम रस स्वाद प्रगट कर ॥२६॥

परम अपूरब भयो एक कारण तेहि माहीं ।
भाग्यवान को सर्व काल किंचित दुख नाहीं ।।२७।।
अनायास बिन यत्न मिलत सुख स्वाद अपारा ।
सुकृतवान सर्वदा करत बहु भोग बिहारा ।।२८।।
जितनी नव नायिका राम रमणी सुकुमारी ।
सर्व सकल गुण खानि भाव भूषित मन हारी ।।२९।।
रस के जितने भाव भेद विज्ञा सब वाला ।
होत प्रकाशित रास मध्य प्रिय मधुर रसाला ।।३०।।
सब सुख गुण आगार दोष रहिता प्रिय पावन ।
करैं परम कमनीय रास लीला मन भावन ।।३१।।
यद्यपि यह अतियुक्त शुद्ध जो भक्तिमान नर ।
गुण ही देखत सतत बस्तु कर्त्ता के मुद भर ।।३२।।
चाहे होवे दोष बस्तु करने में कोऊ ।
तदपि न देखत दोष गुणहिं को देखत सोऊ ।।३३।।
पर इनके कर्त्तव्य रास में दोष न लेशा ।
जहाँ रमत अखिलेश राजनन्दन रसिकेशा ।।३४।।
रसमय मनहर नृत्य गान प्रिय हाव भाव युत ।
हास्य भरे वर वयन चयन प्रद अतिसय अद्भुत ।।३५।।
बजत बिबिधि वर बाद्य सरस भाषण अनेक विधि ।
भूषण बसन अनूप चित्र चित्रित सुषमा निधि ।।३६।।
सबके केश समूह नवल अम्बुज सम श्यामा ।
सरस्वती तुम्बिका वीण कर सदृश ललामा ।।३७।।

गोल प्रकाशित परम सु कटि पतली प्रिय मनहर ।
अमल कपोल रसाल लाल हिय महाँ मोद कर ॥३८॥
शोभित पिय के दन्त सुचत से वर्ण युत वर ।
विद्युत जिमिदमकात सु द्युति अति परम सुभग तर ॥३९॥
पद्मरागमणि सदृश लगत अतिसय मन भावन ।
अथवादाड़िम सरिस पिया को चित्त चुरावन ॥४०॥
अपर सकल अँग सुभग मनोरम परम मनोहर ।
पिय को सब सुख दैन ऐन प्रिय मधुर सरस तर ॥४१॥
करि बहु केलि कलोल पिया की सुरुचि बड़ाई ।
दियो विचित्र सुस्वाद अमल आनन्द अघाई ॥४२॥
इनको सकल समाज साज साहित्य निरखि कर ।
चक्रवर्ति नृप कुँवर भुवन भूषण सनेह घर ॥४३॥
पायो परमानन्द प्रेम पगि परम पियारे ।
लहि सुख स्वाद अनेक भाँति हिय भये सुखारे ॥४४॥
इधर विदेह नृपेन्द्र लली मैथिली मोद घर ।
सुठि संगीत गुणज्ञ प्रशंसित हिय बिचार कर ॥४५॥
मम वल्लभ प्राणेश सकल सुख भोक्ता छवि धर ।
अति रमनीय रसज्ञ परम सर्वज्ञ रसिक वर ॥४६॥
यहिते श्री मैथिली स्वभाविक अति प्रसन्न हिय ।
निरखैं पिय कमनीय रास लीला सनेह जिय ॥४७॥
यहि बिधि लखि स्वामिनी काहिं उनकी रुचि जानी ।
साध्य कुमारिन लेन परीक्षा पिय की ठानी ॥४८॥

याते जाने नाथ हमनि में गुण अपूर्व वर ।
प्रीतम परम गुणज्ञ गुणन भोक्ता सुषमा कर ॥४६॥
निरखैं अतः अनूप कला पिय की मन भावन ।
युवा वयस सम्पन्न प्राणधन परम सोहावन ॥५०॥
ऐसा सोचि अपूर्व अमानुषि कला प्रगट कर ।
निज वश में कर लिये प्राण वल्लभ उदार तर ॥५१॥
कारण एक विशेष साध्य कन्या समुदाई ।
शुद्ध पवित्र चरित्र कुटिलता तन न छुआई ॥५२॥
याही ते वश भये श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
होत कदा न प्रसन्न कुटिलता से जगवन्दन ॥५३॥
नवल सु पंचम राग मूर्छना सहित मंजु स्वर ।
कियो गान जेहि समय साध्यकन्यन उमंग भर ॥५४॥
श्रवण परत सो राग विटप बैठे पक्षी गन ।
मोहित हो महि गिरे पुष्प युत बिसरि ख्याल तन ॥५५॥
परम रसामृत पाय सुरन ने सुमन गिराये ।
याही ते खग वृन्द गिरे महि पर मुर्झाये ॥५६॥
कोकिल कीर कपोत केकि अरु कोक सुहावन ।
नीलकण्ठ सारिका भृंग खंजन मन भावन ॥५७॥
तीत्तर चतुर चकोर हंस टिटिहरी रँगे रग ।
अपर पक्षिगण अमित विपुल मृग बिचरत सँग सँग ॥५८॥
रासस्थली मझार सकल अति शोभा पावत ।
साध्य सुतनि के साथ जहाँ पिय रमत रमावत ॥५९॥

लखि सु रास आश्चर्यमयी गन्धर्व राज वर।
आकृति वाले रामश्याम सुन्दर अति मनहर ॥६०॥
राजिव नयन विशाल अवस्थित स्वयं रास में।
साध्य कुमारिन संग रंग रँगि अति हुलास में ॥६१॥
सबके सरस कपोल अमल पर्शत रस माते।
करत अधर रस पान सखिन के हिय लपटाते ॥६२॥
वेधित चित्त अनंग बाण सबहिन को एक सम।
आदर करि सुख देत राजनन्दन अति अनुपम ॥६३॥
दक्षिणनायक बने सबहिं रस रंग रँगाई।
दीनो "सीताशरण" स्वाद सुख परम अघाई ॥६४॥
वर्णत सूत सुजान अहो आश्चर्य महाना।
काम बाण से व्यथित राम रघुबीर सुजाना ॥६५॥
राम शब्द अभिराम रमत योगिन हिय माहीं।
त्रिगुणातीत सु दिव्य काम व्यापत जेहि नाहीं ॥६६॥
सोइ अनंग सर व्यथित यही घटना अति अघटित।
उभय विरोधी धर्म निबाहत किमि उदार चित्त ॥६७॥
कहलावत सोइ ब्रह्म विरोधी धर्म विपुल सँग।
निबाहै एक बार रँगावै सब को निज रँग ॥६८॥
परब्रह्मश्री राम श्याम सुन्दर सब लायक।
जो कछु करैं सो थोर परम रस निधि नव लायक ।६९॥
चिन्मय इनको प्रेम दिव्य केवल रस स्वादन।
करत सखिन के संग बने लम्पट मन भावन ॥७०॥

रस स्वरूप श्रीराम करत रस मय चरित्र वर ।
रस क्रीड़ा कमनीय सकृत अति सुखद सु प्रिय कर ॥७१॥
चहुँदिशि सखी समूह मण्डलाकार सुहावैं ।
मध्य प्रेम रस पगे प्राण प्रीतम छबि पावैं ॥७२॥
सबने हिय हर्षाय पिया के युगल कंज कर ।
पकरे प्रेम समेत गले लगि हिय उमंग भर ॥७३॥
निजनिज भावनुकूल सरस अंगन लटपाई ।
लखैं विमल मुख कंज मंजु अतिसय सुख पाई ॥७४॥
कोइ अधरामृत पियत कपोलन चूमत कोइ सखि ।
कोइ सखि गर लपटाय मन्द मुसुकावति मुखलखि ॥७५॥
मेचक कुंचित केश कपोलन पर छहरावत ।
मानो विमल मयंक उपर अहिगण लहरावत ॥७६॥
कोइ सखि हिय हर्षाय सु अलकावली हटाई ।
निरखै मुख माधुरी मुग्ध मंजुल मुसुकाई ॥७७॥
मोतिन माल सु जाल माल पर अति छबि पावै ।
सुन्दर तिलक उदार सबनि मन चित्त चुरावै ॥७८॥
रूप अनूप अपार मार मर्दन सुखदाई ।
साध्य सुता समुदाय परम रस सिन्धु समाई ॥७९॥
सब सोचैं मन माहिं हमी को प्राण अधारे ।
मानत सबसे अधिक प्यार करि नृपति दुलारे ॥८०॥
मेरे ही कर बिके परम मोहित मम छबि लखि ।
पावत परमानन्द हमी से सोचत सब सखि ॥८१॥

सब सखि पिय से कहैं अहो रस लम्पट मन हर ।
मैं भोग्या सब भांति आपकी हे उदार वर ॥८२॥
तिमि है जीवन प्राण आपहू भोग्य हमारे।
हो सब विधिरसिकेश सु छवि धर राज दुलारे ॥८३॥
दक्षिण नायक बने रसिक मणि रूप अमित वर ।
प्रगटे आनँद कन्द द्वन्द दुख हर प्रमोद कर ॥८४॥
सकल सखिन के संग रमत पिय एक एक रूपा ।
देत सबहिं सुखस्वाद राजसुत परम अनूपा ॥८५॥
यहि ते सखि समुदाय सकृत अपनो सुख देखैं ।
अन्य नायिकन संग रमण कोइतिय नहिं पेखैं ॥८६॥
सकल नायिकन संग प्रेम पूतित रस सागर ।
नृत्यत भरि अनुराग गीत गावत नव नागर ॥८७॥
कदा कबहुँ कोइ वाम पियै पकरै हर्षाई ।
अति द्रुत लेत छुड़ाय राजनन्दन रघुराई ॥८८॥
यथा लरत दो मल्ल एक पकरत एक काहीं ।
सो छुड़ाय निज काहिं होति प्रमुदित मन माहीं ॥८९॥
प्रभु सम अपर न मल्ल तिनहिं पकरैं नव नारी ।
बलकरि लेत छुड़ाय राज नन्दन मन हारी ॥९०॥
सकल तियन के सहित मनोरथ निज सु वृद्धि कर ।
भरे अनंग अनन्द सत्व निज भूलि रसिक वर ॥९१॥
सकल नायिकन बीच चेष्टा इन्द्रिन केरी ।
रास रसिक शिर मौर करत भरि भाव घनेरी ॥९२॥

दृग सों करत कटाक्ष सखिन के ललित उरोजा ।
मर्दत नृपति कुमार पकरि निज करन सरोजा ॥९३॥
मुख से चुम्बत अमल सरस अति कलित कपोला ।
करत अधर रस पान कण्ठ लगि कहि मृद बोला ॥९४॥
तथा सकल सखि बृन्द पिया की रुचि अनुसारी ।
करैं प्यार बहु भाँति पगीं रस रीति अपारी ॥९५॥
लखि पिय की रस क्रिया सखिन हिय रुचि अधिकाई ।
तथा सखिन की क्रिया निरखि पिय रुचि बढ़िजाई ॥९६॥
पिय को लखि सब सखी सखिन लखि प्राण अधारे ।
विहरत अति आशक्त होत हिय परम सुखारे ॥९७॥
प्राकृत अशुचि अनित्य गन्धमय बिषय विकारा ।
निज सुख स्वारथ हेत नहीं यह जग व्यवहारा ॥९८॥
परम रसात्मक दिव्य एक रस शुचि सुगन्ध मय ।
पिय प्यारी की केलि अप्राकृत मधुर सुधामय ॥९९॥
हरन सकल भव रोग सोक सुख स्वाद प्रदायक ।
ध्यावत (सीताशरण) रशिक वर बहु मुनि नायक ।१००॥

दोहाः— रसिकन प्राण अधार यह, सिय पिय केलि अनूप ।
सीताशरण प्रमोद कर, सुधासिन्धु रसरूप ॥ ३ ॥

यहि बिधि बहुँ वर वाम परम सुन्दरि सुकुमारी ।
सुभग चेष्ठा युक्त दीर्घदृग अति मन हारी ॥ १ ॥
नितपिय के अनुकूल रूप पात्रा सु मुखी प्रिय ।
पगीं पिया के प्यार परम अनुराग भरित हिय ॥ २ ॥

वे सब साध्य कुमारि परम उत्तमा रँगी रंग।
लह्यो अमित सुख स्वाद रमण करि पियतिन के सँग ॥ ३ ॥
मिलि जग के सुख स्वाद सकल तेहि सुख सम नाहीं।
सुख वाचक जे शब्द सकल नीचे दिखलाहीं ॥ ४ ॥
पूर्णब्रह्म परमीश सु अवतारन अवतारी।
चक्रवर्तिनृप सुवन भुवन भूषण मन हारी ॥ ५ ॥
यहि सुख स्वाद समान अपर सुख स्वाद न मानत ।
यह रहस्य कमनीय तत्व वेत्ता मुनि जानत ॥ ६ ॥
करि यह रहस ललाम राम अभिराम सरस तर ।
साध्य कुमारिन दियो विपुल आनन्द हृदय भर ॥ ७ ॥
यह रस राज सु साज रास रस स्वाद मधुर तर ।
श्रेष्ठ कविन हिय भूमि माहिं अद्भुत प्रकाश कर ॥ ८ ॥
प्रभु के कृपा सु पात्र श्रेष्ठ कवि वृन्द उदारा
गावहिंगे रस राम भविष्य में विपुल प्रकारा ॥ ९ ॥
सुखानन्द परिपूर्ण राजनन्दन किशोर वर ।
निरखि सखिन मुखचन्द्र रसिक चूड़ामणि छबि धर ॥१०॥
अतिसय प्रेम विभोर सुफल निजदृगन बनावत ।
भरि उमंग रस रंग सबनि सँग रमत रमावत ॥११॥
जब कहुँ पवन प्रसंग सखिन के पट उड़ि जावत।
स्वर्ण समान प्रकाश मान अँग लखि सुख पावत ॥१२॥
पियकी अतिमृदु हँसनि कटाक्षादिक मनहारी ।
भयेउ प्रवाह समान लखैं सब साध्य कुमारी ॥१३॥

तैसेहि सखिन सुहास्य कटाक्षादिक सुखदाई ।
परम प्रवाह स्वरूप लखत रघुवर हर्षाई ॥१४॥
हाव भाव रस भरित कटाक्षादिक दोउन कर ।
सरस सुधा से सुखद परस्पर लखत मोद भर ॥१५॥
वह सुख स्वाद अनूप जगत में कोउ न पावै ।
"सीताशरण" कृपालु कृपा ते हिय झलकावै ॥१६॥
श्री सद्गुरु सुखकन्द द्वन्द हर कृपा पाय नर ।
निरखै यह रस रास हृदय में अति उमंग भर ॥१७॥
अपर उपाय अपार करै पचि पचि जग माहीं ।
पर गुरु कृपा प्रसाद बिना रस परसै नाही ॥१८॥
वर्धक काम कलोल केलि क्रीड़ा प्रगटावन ।
सखियन युत रसिकेश हृदय में मोद बढ़ावन ॥१९॥
सकल नायिका बृन्द पिया बिधु बदन चकोरी ।
लखैं निमेष निवारि परस्पर प्रेम बिभोरी ॥२०॥
पी छबि रस पीयूष हृदय में अति सुख पावैं ।
तदपि नपावत तोष चाह बहु भाँति बढ़ावैं ॥२१॥
पुनि सब नव नायिक करैं मन माहिं बिचारा ।
अतिमन हरने मधुर मूर्ति पिय नृपति कुमारा ॥२२॥
लगि न जाय मम नजर अस्तु हिय अति सकुचाई ।
पुनि पुनि राईलोन उतारैं मोद समाई ॥२३॥
वारि पियत बहु वार वारि होवत बलिहारी ।
नवल नागरी नेह नमित सुख लहत अपारी ॥२४॥

पुनि मनके अति सुहृद नित्य निर्दोष सुखद वर ।
शुचि सुशील सुकुमार रामे रघुवीर मधुर तर ॥२५॥
तिन को सब नायिका करैं नीरांजन प्रमुदित ।
कोमल कलित सु गद्य पद्य स्तुति करि हर्षित ॥२६॥
रत्न निवछावरि करैं परम आनन्द समाई ।
मंगलमय पिय चरित गान करि प्रेम बढ़ाई ॥२७॥
अति विचित्र वर नृत्य कला प्रगटावैं नागरि ।
दुर्जय मन रघुवीर मनहिं वश करि गुन आगरि ॥२८॥
पिय को अति सुख देहिं प्रेम पूरित प्रिय वामा ।
करैं केलि कमनीय कला कुशला अभिरामा ॥२९॥
लखि तिन की यह दशा प्रेम मय पिय हिय माहीं ।
बहुरि लखन हित राम केर रुचि प्रगट कराहीं ॥३०॥
जेहि ते विपुल विनोद मोद पावैं सब कोई ।
प्रगटैं प्रमदा वृन्द केलि कौतुक रस मोई ॥३१॥
बस विचार मन हरन मधुर मूरति रस सागर ।
"सीताशरण" अधार प्राण वल्लभ सुषमा कर ॥३२॥
पद्मराग वैदूर्य सु मणि हीरा कृत अद्भुत ।
मण्डप माहिं प्रवेश कियो प्रीतम सखियन युत ॥३३॥
रचना बनी विचित्र चित्र चित्रित चन्द्राकृत ।
तामधि सखिन समेत नवल नायक हिय हर्षित ॥३४॥
अलिन मण्डलाकार खड़ी कर मध्य माहिं पिय ।
शोभित सुषमा सिन्धु रास रसिया उदार हिय ॥३५॥

कोटिन सुठि गन्धर्व सु द्युति निन्दक पिय रूपा ।
अमित कोटि कन्दर्प दर्पहर परम अनूपा ॥३६॥
यहि विधि स्वर्ण समान युगलतिय बिच पिय राजत ।
सकल नायिकन संग रंग रँगि सुख रस छावत ॥३७॥
जितनी सखी समूह सबनि सँग धरि एक रूपा ।
रमत रसिक रसदान रसिक मणि रघुकुल भूपा ॥३८॥
सखिन आप भ्रू भंग रंग से रहे घुमाई ।
घूमत तिन के संग आपहू अति सुख पाई ॥३९॥
नयन सयन चित चयन दैन रस अयन मोदकर ।
हर्षित रहे नचाय सकल सखियन उमंगभर ॥४०॥
शेष सहस वर भुजा परम सुन्दर वल वाना ।
वक्षस्थल अरु अंश पीन कटि क्षीण सुजाना ॥४१॥
तैसेहि ये सब वाल परम छबि जाल सयानी ।
सुन्दरता की सींव कोटि रति रस दानी ॥४२॥
यथा मृगन के यूथ मध्य कोइ मुग्ध केलि कर ।
तथा नायिकन बीच लसत रसिकेश सुछविधर ॥४३॥
नृत्यत चक्राकार रासमधि कदा छबीले ।
पावत परम प्रमोद प्रेम पालक रिझवीले ॥४४॥
श्रम वश जब थकि जाव मोद युत रसिक रँगीले ।
धरि केहु सखि की गोद माहिं पग गुन गर्वीले ।४५॥
प्यारी मंजुल अंक माहिं शिर धरि नव नागर ।
सोजावत चित चोर चतुर चंचल रस सागर ॥४६॥

नवल नायिका नेह नमित राजैं चहुँ ओरी ।
व्यजन आदि कर लिये ढुरावत प्रेम विभोरी ॥४७॥
पिय को पाय निदेस प्यार पगि प्रिय मृग नयनी ।
सोईं पिय के संग रँगि कोकिल वयनी ॥४८॥
करि सब को श्रमदूर शोक श्रम हर रघुराई ।
दीनो परमानन्द स्वाद सुख विपुल अघाई ॥४९॥
बहुरि करत जब नृत्य नील कल कमल सदृस तन ।
राजिव नयन विशाल राजनन्दन उदार मन ॥५०॥
नारी रति रस स्वाद परम लम्पट सुठि सूरति ।
"सीताशरण" अधार मधुर मंजुल मृदु मूरति ॥५१॥
मन्द मन्द मुसुकाय गाय दो सखिन मध्य पिय ।
धरि तिन के प्रिय अंश माहिं निज बाँह मुदित हिय ॥५२॥
झूलत राजकिशोर प्रेम पगि तौलत निज तन ।
युगल भुजा कमनीय लसैं अद्भुत शोभा बन ॥५३॥
क्वापि किशोरी बाल आप के अंक विराजति ।
निरखि विमल विधु बदन चकोरी इमि सुख पावति ॥५४॥
पुनि हिय में भरि भाव अधर रस पियति मोद भर ।
पावति परमानन्द स्वाद सुख अति अनूप तर ॥५५॥
कबहूँ राजकिशोर अंक में सोई प्रिय सखि ।
अधरामृत रस स्वाद लेत मुखं कंज मंजु लखि ॥५६॥
चुम्बत अमल कपोल बोल अनमोल सुहावन ।
बोलत रसिक नरेश प्राण वल्लभ मन भावन ॥५७॥

क्वापि काम वेदना भरी कामिनी कलित वर ।
दन्तक्षत पिय केर पाय हिय माहिं क्रोध कर ॥५८॥
प्रीतम प्रिय सुकुमार अंग में नख प्रहार किय ।
सो लीला लखितासु अपर सखि हँसत मुदित हिय ॥५९॥
हास्य करत निज काहिं जानि सो सखि रिसियाई ।
पिय की निन्दा करै विपुलविधि भाव बताई ॥६०॥
कबहुँ सखिन चितचोर गले से सुमन सुमाला ।
निज कर कंज निकारि बुलावत कोउ प्रिय वाला ॥६१॥
पहिरन हित सो वाम मुदित आई पिय पासा ।
अन्य सखिन दै दई माल सो अली निरासा ॥६२॥
दौरी पकरन पियै चले भजि राजकुंवर वर ।
पुनि तेहि कण्ठ लगाय प्यार करि हृदय मोद भर ॥६३॥
कदा क्वापि कामिनी पिया के आभूषण वर ।
छोरि चलति हँसि भाजि वाहि पकरनहित छबि धर ॥६४॥
दौरि चलत तेहि ओर परम रसबोर चोर चित ।
पकरि लेत हर्षाय धाय हियलाय सहित हित ॥६५॥
केहु के भूषण छोरि अन्य तिय को पिय देवत ।
सो पकरनहित चली भजे पिय अति रस लेवत ॥६६॥
यहि बिधि लालरसाल केलि कौतुक कलोल करि ।
देत सखिन सुख स्वाद प्रेम लम्पट प्रमोद भरि ॥६७॥
सकल कला कल कुशल केलि लोलुप नव नागर ।
दक्षिण नायक सुहृत शील गुण निधि रस सागर ॥६८॥

पिय दक्षिणनाय कत्व गुण वश सब प्रिय वामा ।
सोचहिं निज मन माहिं भये मम वश सुख धामा ॥६९॥
ऐसोई वर ज्ञान सबनि के हृदय मझारी ।
करत सबनि ते अधिक प्यार मोकहँ धनुधारी ॥७०॥
सब बिधि मम आधीन प्राण वल्लभ सुषमाकर ।
देत मोहिं सनमान अधिक रसिकेश सुघर वर ॥७१॥
अपने अपने साथ सकल सखि रुचि अनुसारी ।
निरखैं लीला करत प्रेम पगि रास बिहारी ॥७२॥
प्राकृत अवलन सरिस वृत्ति यह दोष महाना ।
यदि यह शंका करै कोऊ बुद्धि बन्त सुजाना ॥७३॥
तो सुनिये चित लाय राम रमणी प्रिय पिय की ।
भाजन प्रीति प्रतीति परम सुखदायक हिय की ॥७४॥
ते सब बिधि निर्दोष दोष किंचित कछु नाहीं ।
पिय को सुख रस दानि बिचारो निज मन माहीं ॥७५॥
जाकी लहि अवलेश कृपा जन अति बड़भागी ।
ताकी महिमा कवन रहै जो हिय सों लागी ॥७६॥
तिन में स्वल्प न दोष सकृत रस वर्धन हेता ।
प्राकृति नारि समान करत बहु केलि सचेता ॥७७॥
याते जो विद्वान होय अतिसय मति माना ।
अति गुण माने याहि सोई बुद्धि वन्त सुजाना ॥७८॥
कोई प्रेम प्रमोद पगी प्रमदा प्रिय बानी ।
बोलत भाव समेत बचन अति रति रस सानी ॥७९॥

हे जीवनधन लाल रसिक वल्लभ रस रासी।
रति रस लम्पट चतुर चपल चित विशद विलासी ॥८०॥
अंग संग तव पाय कदा कामाग्नि हमारी।
जो पै भई न शान्त कहिय तो आप बिचारी ॥८१॥
और कहाँ हम सकल शान्ति पइहैं केहि पासा।
बतलाइय चितचोर आप ही कृपा निवासा ॥८२॥
यहि बिधि निश्चय करति नाथ यह बुद्धि हमारी।
हे रसिया रस स्वाद मगन हे रास बिहारी ॥८३॥
जो जन जग में तपा आय सो तुम्हरे पासा।
सबरे ताप मिटाय शान्त हो लहै हुलासा ॥८४॥
जो कोइ तुम्हरो अंग सग लहि पावै तापा।
वाको जीवन नाथ कौन मेटै संतापा ॥८५॥
सो न मिटै केहु भाँति करै किन कोटि प्रयासा।
संतत पावै क्लेश सर्वदा रहे उदासा ॥८६॥
हे पिय परम प्रवीण प्रीति पालक प्रिय नायक।
डारी मोहनि मन्त्र हमनि पर हे रघुनायक ॥८७॥
यद्यपि परम समर्थ आप हे प्राण अधारे।
तद्यपि नहिं हो सकत कदा मम हिय से न्यारे ॥८८॥
मम सब विधि गति एक आप ही रूप रसिक वर।
मेरो मन चित्त बुद्धि प्राण सब तुमहिं त्याग कर ॥८९॥
अपर जगह नहिं चहत जान कारण यह भारी।
तव मूरति मृदु मधुर मंजु मन मोहन हारी ॥९०॥

यामें बड़ गुण एक वशै जाके हिय माहीं ।
वाको फिर जग माहिं अपर कोउ भावत नाहीं ॥९१॥
कहत सूत मुनिराज सकल सखि पिय तन माहीं ।
लखि नखक्षत उपहास्य कीन सो गुनि सकुचाहीं ॥९२॥
अथवा निन्दा कीन दोष यह निज में जानी ।
क्षमा याचना हेत बचन बोलहिं रस सानी ॥९३॥
कहि उपरोक्त सु बचन विपुल चंचल मृग नयनी ।
नमस्कार करि पियै लखैं छवि कोकिल बयनी ॥९४॥
पुनि बोली कोइ वाल लाल से बचन सरस तर ।
हे पिय परम प्रवीण प्रीति पालक प्रमोद कर ॥९५॥
मोहिं कहा जो देन नाथ एकान्त कुंज में ।
सो दे दीजिय वेगि अभी सब सखिन पुंज में ॥९६॥
सुन्दरेन्द्र हे रमण लिये बिन छुड़िहैं नाहीं ।
चाहे कोटि प्रकार यत्न सोचिय मन माहीं ॥९७॥
कहि इमि बचन रसाल लाल को पीताम्बर गहि ।
निरखति मुख माधुरी प्यार भरि हृदय खड़ी रहि ॥९८॥
लखि वाकी यह दशा अपर सखि कहत सुनाई ।
हे किशोर रस बोर राजनन्दन रघुराई ॥९९॥
करि यहि संग यहि भाँति हँसी हे रूप रसिक वर ।
डारत (सीताशरण) विघ्न रस में क्यों छवि घर ॥१००॥

दो०—कहि पिय सों यहि भाँति पुनि, तेहि सखि सों प्रिय वयन ।
बोली "सीताशरण" सो, रसमय सब सुख अयन ॥ ४ ॥

हे विवेक से रहित महा मुग्धे अपमाना ।
कर के क्यों हम सबनि केर तू निज मनमाना ॥ १ ॥
चाहति हठ करि करन व्यर्थ आग्रह दिखलाई ।
होकर सब से भिन्न पियै पीड़ा पहुँचाई ॥ २ ॥
तोहि न ऐसो उचित देखु निज हृदय बिचारी ।
विघ्न रूप जनि होय मानि प्रिय गिरा हमारी ॥ ३ ॥
राजकिशोर रसज्ञरास रसिया रस सागर ।
नायक नित नव नेह नमित गुण निधि प्रिय नागर ॥ ४ ॥
हास बिलास विनोद बिपुल आनन्द रूप प्रिय ।
रस मय पिय को रास होन दे लखु बिचारि हिय ॥ ५ ॥
सुनि वाको अस वचन बहुरि बोली सो बाला ।
ठग विद्या में निपुण सकल विधि तुम छवि जाला ॥ ६ ॥
करि निज माया प्रबल पियै तुम कुंज मझारी ।
लै जाना मन चहौ अकेले परम सुखारी ॥ ७ ॥
याही ते फटकारि मोहिं तू भय दिखलाई ।
चाहति पिय सँग रमन लखी मैं तव चतुराई ॥ ८ ॥
नहिं यहि कला प्रवीण अहो तुम सब सखि बृन्दा ।
ज्ञान कला से रहित लहो किमि अति आनन्दा ॥ ९ ॥
कोइ नायिका नवीन मन्द मुसुकाति छवीली ।
सुन्दर अमल कपोल सरस गुण निधि गर्वीली ॥१०॥
प्रमुदित लगि पिय कण्ठ कहति कछु कान मझारी ।
ताली बहुरि बजाय खड़ी हो दूर सुखारी ॥११॥

लगी जोर से हँसन निरखि बोली तिय दूजी।
उसने अच्छा किया नाथ तुम्हरी रुचि पूजी ॥१२॥
ठीक ठीक यह काम भयो तुम्हरोहि मन भावन।
अन्य तियन को लखत आप नित चहत रमावन ॥१३॥
कहि ऐसे वर वयन लगी हँसने सोउ वामा।
पायो परमानन्द प्राण प्रीतम सुख धामा ॥१४॥
कहन लगी कोइ बाल आप सब निज मन भाये।
भले मनोरथ कहौ वाक्य चातुरी छिपाये ॥१५॥
पर पिय के हिय केर हाल तुम सब क्या जानो।
बोलो बात बनाय वृथा ही निज अनुमानो ॥१६॥
पिय के अन्तष्कर्ण केर गति जानै सोई।
जो तिय गण में तिलक विदग्धा शुचि बुधि होई ॥१७॥
अस जब कोइ सखि कहै श्रवण सुनि कहति अपर तिय।
यौवन हम सब केर सुफल चाखन हारे पिय ॥१८॥
नित्य प्रेम रस सने परम भोक्ता प्रिय नायक।
हम सब को सुखदान प्रेम लम्पट सब लायक ॥१९॥
उनके अन्तष्कर्ण और सिद्धान्त विचारा।
हम सब काहे करें यही मत विमल हमारा ॥२०॥
हमनि प्रयोजन कौन क्यों कि हम सब ललना गन।
मम जीवन सर्वस्व नाथ मुख चन्द्र सु दर्शन ॥२१॥
हम सब उनके भोग्य भोक्ता वे सब केरे।
जैसे चाहें रखें सबहिं पद पंकज नेरे ॥२२॥

अपनी रुचि अनुसार भोग भोगैं हृदयेश्वर।
जीवनधन छवि धाम प्राण वल्लभ रसिकेश्वर ॥२३॥
याते हम सब केर व्यर्थ वक्तव्य बिचारो।
है त्रिकाल में शुद्ध सकल विधि राजदुलारो ॥२४॥
सुर नर मुनि समुदाय करत इनकी पद पूजा।
हम सब केर अधार नहीं इनको तजि दूजा ॥२५॥
ये हम सब के मध्य मुग्ध इव परम अज्ञ बन।
रस क्रीड़ा अनभिज्ञ मनो दर्शंत उदार मन ॥२६॥
किन्तु सुनो सखि वृन्द परम आनन्द कन्द पिय।
दायक परमानन्द हरन दुख द्वन्द विमल हिय ॥२७॥
परम रसज्ञ सुशील सरलमति करुणा गारा।
सर्व भाँति निर्दोष कुटिलता रहित उदारा ॥२८॥
जो दिखलाई परति कुटिलता हम सब केरी।
याते हे सखि वृन्द करो जनि तर्क घनेरी ॥२९॥
इन में जो गुण दोष समय पर वे प्रगटावत।
तब हमरो क्या काम बिचारें वही जनावत ॥३०॥
क्या हम सब निज अंग क्रिया या मन की दासी।
निज सुख की चाहना करैं जिमि परम विलासी ॥३१॥
हम सब सुन्दर श्याम राम मन हरन मधुर तर।
मंजुल मूर्ति महान तासु दासीं जो छबि धर ॥३२॥
याते निज सुख लागि बिचरब हम सब केरो।
केवल भारी भूल होय पुनि दोष घनेरो ॥३३॥

अति सर्वज्ञ कृपालु सुहृद सब भाँति सुखद वर ।
सो दइहैं सुख स्वाद यथोचित परम मोद कर ॥३४॥
सुनि वाके बर बचन रचन बोली कोउ वामा ।
प्रीतम काहिं सुनाय कामिनी बचन ललामा ॥३५॥
हे सखि प्राण अधार काहु सखि को प्रिय जानी ।
राखत प्रेम बिशेष हमनि ते तेहि निज मानी ॥३६॥
ये पिय को व्यवहार हमारे मर्म सु छेदन ।
करै सुनो सखि वृन्द होइ हिय में अति बेदन ॥३७॥
सुनि वाके अस वयन अन्य नवला कोउ बोली ।
बचन मधुर मन हरन परम प्रेमामृत घोली ॥३८॥
हे सखि अस क्यों कहो प्राणधन भेद न मानत ।
रखि सब में सम भाव सबहिं अपनी करि जानत ॥३९॥
सब को आदर देत प्राण वल्लभ प्रिय सब को ।
करत सबनि सों प्यार भयो अनुभव अस हम को ॥४०॥
पर हे प्यारी बहिन भाग्य हम सब के समनहिं ।
यह महान तर दोष हमनि में सोचा तुम कहिं ॥४१॥
पिय सब बिधि निर्दोष कहो यदि राज कुँवर वर ।
सम क्यों नहिं करि देत सबनि को भाग्य सु छवि धर ॥४२॥
तो अस कबहुँ न होइ बराबर भाग्य सबनि को ।
जो पै पिय करि देहिं तबहुँ न्युनाधिक हम को ॥४३॥
होगा ऐ सखि अवसि करो किन कोटि प्रयासा ।
जो ऐसो नहिं होय बनै कोउ किमि केहु दासा ॥४४॥

ना कोउ स्वामी बने कदा कबहूँ केहु केरो ।
जब स्वामी नहिं रहैं बनैं किमि कोउ केहु चेरो ॥४५॥
याते ऐ प्रिय सखी विषमता अवसि रहेगी ।
जैसो जाको भाग्य अहै रस स्वाद लहैगी ॥४६॥
सुनि वाकी अस बात अन्य सजनी कोउ बोली ।
सखी यथारथ कही आपने हिय को खोली ॥४७॥
जो पै सबको भाग्य एक सम ही हो जावै ।
स्वामी सेवक धर्म जगत में किमि रह पावै ॥४८॥
तो फिर सेवा धर्म मुख्य क्या विफल न होगा ।
अवसि विफल हो जाय बनै यदि अस संयोगा ॥४९॥
जाको उत्तम भाग्य मिलै तेहि उत्तम सेवा ।
जासु भाग्य अति न्यून तथा सेवकाइ करेवा ॥५०॥
यह सुनि पुनि कोउ वाम मुदित बोली प्रिय बानी ।
निज हिय को अनुमान कहौं मैंने जस जानी ॥५१॥
एक पिया की कृपा मुख्य जेहि पर जस होई ।
नहिं कोइ कारण अन्य करै सेवा तस सोई ॥५२॥
यहि प्रकार जब वयन पद्म गन्धादिक बामा ।
बोलीं रुचि अनुसार मधुर रस भरित ललामा ॥५३॥
तब बोले रसिकेश श्याम सुन्दर श्री रामा ।
रूप अनूप अपार प्रेम पूरित छबि धामा ॥५४॥
तुम सब यहि विधि बाद व्यर्थ एकान्त मझारी ।
चंचलता से करति त्यागि येहि परम सुखारी ॥५५॥

करो सकल विश्राम मानि बानी यह मोरी।
सुनि पिय के अस वचन सकल सखि प्रेम विभोरी ॥५६॥
उठि के जहँ तहँ गईं परम एकान्त सिधाई।
दक्षिण नायक प्रवर प्राण धन श्री रघुराई ॥५७॥
श्री मिथिलाधिप लली केर सखि को धरि रूपा।
गये मैथिली पास स्वयं पिय रघुकुल भूपा ॥५८॥
दिव्य भव्य मणि भवन माहिं सोवत सिय प्यारी।
गमने तिनके निकट प्राण धन सखितन धारी ॥५९॥
करि प्रणाम गय बैठि वार्ता करत सुखारी।
बोले पिय सखि रूप सुनो हे राजदुलारी ॥६०॥
पिय की जेती सखीं अहो तुम सब की स्वामिनि।
हम सब दासी अहैं आप सब को अभिरामिनि ॥६१॥
तुम सौभाग्य सु सींव धर्म पतिनी पिय केरी।
प्रीतम प्रीति कि पात्र लहो सुख स्वाद घनेरी ॥६२॥
पर हे अबुधे आप जिनहिं निज मन तन प्राना।
सब कुछ अर्पण किये परम संजीवन माना ॥६३॥
उनकी जो करतूति आज मैं निज दृग हेरी।
सो मैं तुमसे कहौं सुनो मिथिलेश किशोरी ॥६४॥
तब लघु चेरी संग रंग रँगि आज रसिक वर।
पायो परमानन्द रमण करि सब विधि छविधर ॥६५॥
निज रस स्वाद कराय पियै अपने वश कीना।
प्रीतम चित्त चुराय लियो ऐसो सुख दीना ॥६६॥

हारे रसिक नरेश प्राण जीवन धन प्यारे।
जीती सो वर वाम करैं विनती सुकुमारे ॥६७॥
केवल प्यारी तुमहिं यज्ञ के योग्य बिचारी।
अपर प्रयोजन रखत नहीं तुम से धनुधारी ॥६८॥
यज्ञ करैं तब साथ अन्य को नहिं अधिकारा।
कैसे चतुर चलाक नृपति सुत करो बिचारा ॥६९॥
यज्ञ करन के योग्य जानि तुम को पिय प्यारे।
किंचित आदर देत राजनन्दन सुकुमारे ॥७०॥
नहिं उनको वर भाव आप में प्राण पियारी।
रस की कला विहीन जानि श्री रास विहारी ॥७१॥
दायक सब सुख स्वाद तुमहिं समुझत नहिं प्यारे।
याते तुम्हरे संग रंग रँगि राज दुलारे ॥७२॥
करत न विपुल विहार अन्य नायिकन रमावत।
नृप किशोर चित चोर तहाँ अतिसय सुख पावत ॥७३॥
अपर तियन को चतुर गुणी गुनि प्राण अधारे।
विहरत विपुल प्रकार होत कृत कृत्त सुखारे ॥७४॥
पावत हर्ष अपार अन्य तिय संग रसिक वर।
झूठा प्रेम जनाय आप से बोलत छविधर ॥७५॥
हिय से रहत उदास प्रेम बाहर दिखलावत।
नृप कुमार सुख सार प्यार झूठो दर्शावत ॥७६॥
तब हिय करिय विचार आप ही राज कुमारी।
पिय की मान्या होय अन्य कोउ तिय किमि प्यारी ॥७७॥

तुम्हरी समता चहै कौन असती बन बासिनि।
निषाद सुता सुभाग्य रहित किमिहोय विलासिनि ॥७८॥
पतिव्रता नहिं होय जानिये तेहि व्यभिचारिणि।
जो तजि निज मर्याद होय स्वच्छन्द विहारिणि ॥७९॥
ब्रह्मसुता किन होय तदपि गुण शून्य विचारो।
जो तजि दे निज कानि यही सिद्धान्त हमारो ॥८०॥
हम सब तव पद कंज केर दासी हे स्वामिनि।
दै न सकैं तेहि मान आप ही मम अभिरामिनि ॥८१॥
याते हे लाड़िली प्राण धन यदपि चतुर वर।
पंडित परम प्रवीण शील गुण सिन्धु सुभगतर ॥८२॥
तद्यपि मैं अस कहौं सकल गुण रहित प्राण धन।
स्वामिनि तुमको त्यागि चहत दासिन लोलुपमन ॥८३॥
याते यही बिचार हमारो हे सुकुमारी।
तुम न जाव पिय पास मानि हिय बात हमारी ॥८४॥
तुम हो श्री मैथिली मंजु मूरति मन भावन।
सहैं न अस अपमान आप सब सुख बर्षावन ॥८५॥
सुनि निज सखि के बचन असंगत अति भ्रमकारी।
भ्रान्ति रहित शुचि हृदय मैथिली अवनि कुमारी ॥८६॥
बोलीं वासे वचन अरी तू सखी हमारी।
भ्रमिक असंगत व्यर्थ विनिन्दित गिरा उचारी ।८७॥
याते धिक् धिक् तोहि शास्त्र श्रुति वंचित वानी।
मुझ को रही सुनाय परम भोरी मोहिं जानी ॥८८॥

निश्चय मम हिय माहिं करन हित भ्रम समुदाई ।
लौकिक बात चलाय प्रबल माया फैलाई ॥८९॥
करवावन विश्वास मोहिं कहँ युक्ति अनेका ।
तू ने प्रगटीं विपुल सकल एकन ते एका ॥९०॥
याके बदले सुनै सखी जग में सरि जेती ।
चाहे जल बिन सकल नष्ट हो जावें तेती ॥९१॥
सूखैं सकल समुद्र प्रलय हों भुवन चतुर्दश ।
सब देवता नसायं तबहुँ मम प्रबल प्रेमरस ॥९२॥
पिय में बाढ़त जाय घटै सपनेहुँ में नाहीं ।
तैसेहि प्रीतम केर प्रेम नित मेरे माहीं ॥९३॥
कबहूँ क्षय हो नाहिं सदा अक्षय दिन राती ।
पिय का मुझ में भाव मोर पिय में सब भाँती ॥९४॥
याको नाश न होय कदा केहु विधि केहु काला ।
हम दोउ को सम्बन्ध अचल सुख रूप रसाला ॥९५॥
लोक दृष्टि से कोइ अगर हम में या पिय में ।
उदाहरण शृंगार वैर में दे गुनि हिय में ॥९६॥
भाग्य हीन तेहि जानि लेहु निश्चय मन माहीं ।
पिय प्यारी की प्रीति विना शृंगारहि नाहीं ॥९७॥
नायक अरु नायिका केर जो प्रीति परस्पर ।
जानो सोइ शृंगार बदत सज्जन सुशील तर ॥९८॥
कल्प वृक्ष के निकट यथा कोऊ दुख पावै ।
तैसेहि भाग्य विहीन व्यक्ति यह द्वन्द बतावै ॥९९॥

कल्पवृक्ष के निकट दुखी आवत कोउ प्रानी।
पावै "सीताशरण" अवमि अभिमत रस सानी ॥१००॥

दो०–तथा कृपा, रस, सुख, जलधि, श्री अवधेश कुमार।
जीवन प्राण हमार पिय, "सीताशरण" अधार ॥ ५ ॥

सकल विश्व अभिराम भाव ग्राहक रघुनन्दन।
पूरक सब मन काम स्वजन वल्लभ जग वन्दन ॥ १ ॥
तिन के पद पाथोज परम आश्रिता नागरी।
सेवैं सदा अनन्य भाव रति रस उजागरी ॥ २ ॥
पूर्ण मनोरथ करहिं अगर उनके नृप नन्दन।
तो क्या होगा नष्ट एक तिय व्रत सोचो मन ॥ ३ ॥
अथवा पिय तन माहिं दोष कोई लगि जाई।
अहो बावरी कहिय बचन मो कहँ समुझाई ॥ ४ ॥
तीनों काल कदापि दोष पिय में नहिं लगिहैं।
पइहैं सुख नायिका परम जो पिय रस पगिहैं ॥ ५ ॥
पुनि इक पत्नी सु व्रत नाथ को नशै न कबहूँ।
कोटि स्वकीयन संग रमै निशि वासर तबहूँ ॥ ६ ॥
यथा कल्प तरु निकट सु छाया में जो आवै।
पूर्ण मनोरथ होत तासु सब विधि सुख पावै ॥ ७ ॥
तदपि कदापि न दोष कल्प तरु में कह कोई।
पूर्ण मनोरथ होत निकट आवत जन जोई ॥ ८ ॥
ऐसेहिं सदा अदोष प्राण जीवन घन प्यारे।
स्वजन सुखद सब भाँति राजनन्दन मन हारे ॥ ९ ॥

उनके प्रति यहि भाँति बात तू कहति बनाई।
भेद बिबर्धक बचन न मैं सुनि सकौं कदाई।। १० ।।
याते होजा मौन मोहिं जनि मुख दिखरावै।
अन्य कुंज चलि जाय न मम जिय काहीं जरावै ।।११।।
यदि मम सन्मुख परीकदा तो सुन मम बानी।
क्षमा युक्त मैं यदपि तदपि तुझ को हठ ठानी ।।१२।।
दइहौं दण्ड अवश्य क्षमा मैं भूलि न करिहौं।
सत्य मानु मम बैन रोष उर में जब भरिहौं ।।१३।।
सुनि इमि सिय के बचन नायिका रूप रसिक वर।
अपर कुंज में जाय बिराजे हिय प्रमोद भर ।।१४।।
कुन्द कुंज के मध्य लसत रसिकेश सुजाना।
विपुल नवेली वाम करत बहु बिधि कलगाना ।।१५।।
पिय जेहि सखि को रूप धारि प्यारी ढिग आये।
बहु विधि अटपट बचन प्रिया को श्रवण कराये ।।१६।।
वाही सखि से कहा जाय तुम प्यारी पासा।
लाओ बेगि बुलाय निकट मम सहित हुलास ।।१७।।
सो शिर आयसु धारि मोद भरि तहाँ सिधारी।
राजैं जहाँ प्रकोप भरी मिथिलेश दुलारी ।।१८।।
वन्दन करि पद कंज बचन बोली हर्षाई।
चलिये हे मैथिली पिया के निकट सिहाई ।।१९।।
तासु बचन करि श्रवण मात्र हिय क्रोध अपारा।
फरकन लागे अधर विम्ब यों वैन उचारा ।।२०।।

क्यों अबुधे तू बहुरि आय मुख मोहिं दिखाया।
अस कहि मारन हेत कमल का नाल उठाया ।।।२१।।
अति क्रोधाकृति बनी दगंचल स्वेत लखाई।
एकायक सो सखी निरखि अतिहिय घबराई।।२२।।
गई चरण लपटाय दीन बनि अति मृदु वानी।
बोली हे स्वामिनी कृपामयि रतिरस सानी।।२३।।
हे मम जीवन मूरि अहौं मैं तव पद दासी।
तव महिमा अति विशद चतुर्दश भुवन प्रकाशी।।२४।।
कहिये मैंने कीन कवन अपराध तिहारो।
मन से अथवा बचन देह से हृदय बिचारो।।२५।।
जिससे करि अति क्रोध हाथ में नाल उठाई।
मो कहँ मारन हेत अपनपौ रहीं भुलाई।।२६।।
हो तुम मम स्वामिनी परम पूज्या मोहिं प्यारी।
विशद विवेकिनि सुहृद परम मान्या सुकुमारी।।२७।।
क्यों कीनों इमि क्रोध अहौं मैं तव पद चेरी।
सेवौं सहित सनेह निरन्तर रहि नित नेरी।।२८।।
सुनि वाके इमि वैन जनकजा कहैं रिसाई।
तू मतवाली भई सकल मर्याद मिटाई।।२९।।
अबहीं मोर समक्ष कहे दुर्वचन घनेरे।
जो सब भाँति अलम्य भुलानी क्या चित हेरे।।३०।।
जब इमि सिय ने कहा बचन बोली सो बाला।
हाथ जोर शिर नाय प्रेमपगि मधुर रसाला।।३१।।

हे स्वामिनि मैं कदा तुमहिं दुर्वचन न कहेऊ ।
मोर न कछु अपराध रोष व्यर्थहि चित भयेऊ ॥३२॥
अन्य सखी कोउ भले तुमहिं कटु बचन सुनाये ।
मुझको प्राण अधार अबहिं तब निकट पठाये ॥३३॥
मैं न रही तव पास सत्य यह बात हमारी ।
निज हिय में विश्वास करिय हे राजदुलारी ॥३४॥
दुर्भागा अस कवन रही जेहि ने कटु बानी ।
प्यारी तुम से कही विपुल महिमा तव जानी । ३५॥
मानो अपने घात लागि तेहि कीन प्रयासा ।
सो दुर्भागा अवसि तुमहिं तजि चहै हुलासा ॥३६॥
जो स्वधर्म से व्यर्थ होत च्युत ते हतभागी ।
तव पद सेवा त्यागि सतत भटकत दुखपागी ॥३७॥
लेकर वाने जन्म व्यर्थ मातहिं दुख दीना ।
जाने तव पद सेइ सुफल निज जन्म न कीना ॥३८॥
पर हे कृपा स्वरूप क्षमा मयि राजदुलारी ।
आप काह कहि रहीं मोहिं सुनि अचरज भारी ॥३९॥
क्या हे जीवन मूरि स्वप्न तुमने तो न देखा ।
अथवा केहु छल कियो आप से आय विशेषा ॥४०॥
या स्वामिनि तव बुद्धि माहिं कछु मोह समायो ।
जिसने करि चित छोभ रोष मो कहँ दिखलायो ॥४१॥
सत्य सपथ करि कहौं बचन अनुचित मैं कबहूँ ।
भूलि कदा नहिं कहेउ आप ने डाँटा तबहूँ ॥४२॥

हे मम प्राणाधार प्रिया श्रुति नीति बनाई।
बिन अपराध न दण्ड काहु को देइ कदाई ॥४३॥
अन्ध बुद्धि अज्ञान बिबश बिन कारण कोई।
देइ काहु को दण्ड उलटि पुनि भोगत सोई ॥४४॥
वाही के शिर पड़त दण्ड तब अति दुख पावै।
भोगत निज शिर पीटि सतत अतिसय पछितावै ॥४५॥
याते हे वल्लभे मैथिली करुणा खानी।
कीजिय मोपर छोह सर्वदा आपन जानी ॥४६॥
मोहिं परम आश्चर्य भयो क्या तुमहिं पियारी।
जो मुझसे भरि रोष आपने गिरा उचारी ॥४७॥
सुनि सखि के अस बचन सिया मन भो सन्देहा।
वा सखि को दुलराय पिया ढिग सहित सनेहा ॥४८॥
भेजीं श्री मैथिली कहा सखि सों प्रिया बानी।
हे सखि पिय ढिग जाय कहो सब बात बखानी ॥४९॥
पुनि प्रीतम जस कहैं आय कर मोहिं सुनाओ।
मम मन को सन्देह सखी अति शीघ्र मिटाओ ॥५०॥
प्रिया बचन करि श्रवण वन्दि पद कंज मोद भर।
पहुँची प्रीतम पास चरण पंकज पर शिर धर ॥५१॥
वन्दन करि सब बात पिया को दई सुनाई।
हँसे रसिक शिरताज राजनन्दन रघुराई ॥५२॥
बोले तू मत डरे दोष तेरो कछु नाहीं।
तुम निर्भय मन जाउ बहुरि पुनि प्यारी पाहीं ॥५३॥

कहना हे मैथिली बुलावत तुमहिं प्राण धन।
लाना शीघ्र लिवाय चली सो सखि प्रसन्न मन ॥५४॥
आई स्वामिनि निकट वन्दि पग हाल सुनायो।
सुनि सखि के प्रिय वचन हृदय अतिसय घबरायो ॥५५॥
श्रीरघुवर भामिनी कान्ति विद्युत अनुहारी।
वरगज गामिनि रूप शील निधि अवनि कुमारी ॥५६॥
निज मन करैं विचार सखी से पिय अस कहेऊ।
मोहिं बुलावत हेत भेजि वहि सखि को दएऊ ॥५७॥
क्या यहि सखि को रूप धारि पिय ही मम पासा।
आये कौतुक करन कीन मुख से वर हासा ॥५८॥
यहि विधि विपुल बिचार मगन श्री जनक दुलारी।
मन में भई अशान्ति विकल भइं अवनि कुमारी ॥५९॥
उधर नील घन सदृश श्याम सुन्दर जीवन धन।
श्री रघुराज किशोर रसिक मणि अति प्रसन्न मन ॥६०॥
षोड़स वर्षी वाम परम रमणी अभिरामा।
नीलसचिक्कन केश ललित वेनी सुखधामा ॥६१॥
श्यामा वय मैथिली मंजु मूरति मन हरनी।
पिय की जीवन मूरि सर्वथा निज वश करनी ॥६२॥
तिन को जानि अशान्त निकट गमने नृप नन्दन।
रसमय आनँद कन्द द्वन्द हर प्रभु जग वन्दन ॥६३॥
पहुँचे प्यारी पास लखा अँग विपुल प्रकाशा।
जिनके तन द्युति केर प्रभा पूरति सब आशा ॥६४॥

चन्द्र किरण सम सुखद मन्द मुसुकान मधुर तर ।
अँग से सौरभ केर झकोरे उठत सरस वर ॥६५॥
इमि सब भाँति उदार मनोरथ पूरक प्यारी ।
प्राणाधिक निज काहिं निरखि रस रास विहारी ॥६६॥
भेंटे कण्ठ लगाय गाढ़ आलिंगन कीना ।
पायो परमानन्द सदन सिय को सुख दीना ॥६७॥
बोले रसिक नरेश सुनो हे रूप उजारी ।
तुम मम जीवन मूरि सतत प्रणहुँ ते प्यारी ॥६८॥
सुनो प्रिये सखि केर दोष किंचित कछु नाहीं ।
या पर कीनो क्रोध व्यर्थ ही निज मन माहीं ॥६९॥
कियो निरादर बहुत डाँट फटकार सुनाई ।
सुनि हम दोउ को प्रबुध दोष दइहैं अधिकाई ॥७०॥
अति लज्जा को काम कियो तुमने हे प्यारी ।
अस कहि मन कछु सोचि वदत पुनि रास विहारी ॥७१॥
कारण जानि न परै कौन की यह बड़ माया ।
हम दोउ के सुख माहिं भेद हित कीन उपाया ॥७२॥
सुनि पिय के इमि बचन रचन मिथिलेश कुमारी ।
दिव्य विचित्र चरित्र परम शुचि क्रीड़ा कारी ॥७३॥
शिव ब्रह्मादिक केर महा माया अति भारी ।
परम विलक्षण वेष तासु से श्री सिय प्यारी ॥७४॥
श्री मिथिलाधिप लली पिया सों अति प्रिय बानी ।
बोलीं भरि उद्गार परम प्रेमामृत सानी ॥७५॥

हे जीवन धन लाल अपर की नहिं यह माया ।
अस मायावी कौन भेद मैंने भल पाया ॥७६॥
यह सब तव कृत छयल अपर की यह गति नाहीं ।
नाहिन अस कोउ अन्य करै माया मोहिं पाहीं ॥७७॥
असमाया केहि केर मोर मन करै प्रवेशा ।
यह गति आपहि केर सकृत है हे हृदयेशा ॥७८॥
शिव ब्रह्मादिक देव मनुज माया इन केरी ।
मम सन्मुख नहिं होत सर्वथा डरति घनेरी ॥७९॥
मम मन में भ्रम करै कौन माया अस भारी ।
वाणी अशुचि असत्य कदा मैं मुख न उचारी ॥८०॥
याते हे रसिकेश आप ही वेष बनाई ।
आये थे मम निकट परीक्षा हित हुलसाई ॥८१॥
तब हिय करिय बिचार स्वयं निज मन में प्यारे ।
तुम गुन ज्ञान समुद्र सतत मम दृगन सितारे ॥८२॥
करन परीक्षा योग्य मोहिं तुमने पिय जाना ।
तब फिर कहिये स्वयं आप ही कर अनुमाना ॥८३॥
भूमि स्वर्ग पाताल माहिं अस को वर नारी ।
पारवती किन होयं पतीव्रत दृढ़ कर धारी ॥८४॥
जो न परीक्षा योग्य शुद्ध हिय शुद्ध सत्व मय ।
को है मोसे श्रेष्ठ रूप गुण गण परत्व मय ॥८५॥
चाहे हे हृदयेश वज्र में छिद्र बनावैं ।
या रवि मण्डल माहिं छिद्र करि कोइ दिखलावैं ॥८६॥

पर हे जीवन नाथ मैथिली हिय में कबहूँ।
लेशहुँ दोष न होय कदा क्रोधित हों तबहूँ ॥८७॥
सब अपलक्षण रहित देह मेरी हे छविधर।
क्योंकि प्रगट मैं भई विशद कुल श्री विदेह कर ॥८८॥
यदि कोइ गुण अरु दोष दृष्टि मेरे में लावे।
तो वह निज यश काहिं परम बिस्तार बनावै ॥८९॥
मेरे दोष निकाल आपनो यश विस्तारै।
सोइ अतिसय गुण वान विमल यश जो जग धारै ॥९०॥
कहि इमि रस मय बयन पिया सों जनक किशोरी।
मणिमय दीपक थार सजि अति प्रेम विभोरी ॥९१॥
सादर आरति करी परम आनन्द समाई।
पुनि विलसीं पिय अंक माहिं हिय लगि हर्षाई ॥९२॥
तत्पश्चात् रसेश राजनन्दन रघुनन्दन।
बोले बचन सप्रेम प्रिया सों पिय जग वन्दन ॥९३॥
हे प्राणाधिक प्रिये अवनिजे जनक कुमारी।
तुम सब भाँति अदोष प्राण वल्लभे हमारी ॥९४॥
सिय के सन्मुख खड़े परम गम्भीर भाव तर।
कहत प्रिया सों वचन रास रसिया उदार तर ॥९५॥
करै परीक्षा जौन आप की वाको महि पर।
होवै अति कल्याण बढ़ै शोभा हिय मुद भर ॥९६॥
यहि विधि अति चातुर्य पूर्णवार्ता करि मृदु हँसि।
हेरत प्यारी ओर प्राण प्रीतम सनेह फसि ॥९७॥

समय पाय सोइ सखी जासु धरि रूप रसिक वर ।
प्यारी सों छल कियो वार्ता विविधि मोद भर ॥९८॥
जिन सिय केर स्वभाव शील गाथा गुण भूरी ।
संत समाज प्रसिद्ध अखिल लोकन में पूरी ॥९९॥
मुग्ध भाव सम्पन्न प्रिया से जिन छल कीना ।
निज वेणी सों उनहिं सखी ने बन्धन दीना ॥१००॥

दोहा—निज वेणी सों सखी ने, बांधे रसिक नरेश ।
सीताशरण अधार मम, अज अन वद्य अशेश ॥६॥

तब बोलीं मैथिली सखिन सों अति प्रिय बानी ।
रसिकन रस दातार पिया मनहर रस सानी ॥ १ ॥
ऐ सखियो ए चोर करत चोरी घर माहीं ।
मन में तनक न डरत स्वयं स्वामी कहलाहीं ॥ २ ॥
इनको देवैं दण्ड काह यह समुझ न आवै ।
छुटन हेत यह यत्न करत को इनहिं छुड़ावै ॥ ३ ॥
तुम सब में अस कौन इनहिं जो देइ छुड़ाई ।
जो पुनि बिहरैं सबनि संग पिय हिय हर्षाई ॥ ४ ॥
यहि विधि पिय सों हास करत मिथिलेश कुमारी ।
सखि वेणी से बँधे खड़े रस रास विहारी ॥ ५ ॥
सहचरि बोलहिं व्यंग बचन मृदु हँसि हर्षाई ।
सब उत्तम कुल रूप शील गुण वयस सुहाई ॥ ६ ॥
मंजुल मूरति मधुर मदन मन मोहन हारी ।
मुनि जन मन वश करनि रूप निधि सब सुकुमारी ॥ ७ ॥

देत सांत्वना पियहिं हृदय में जनि घबराइय ।
जीवन धन रसिकेश न निज मन में सकुचाइय ॥ ८ ॥
हम सब करि वर विनय प्रिया सों तुमहिं छुड़इहैं ।
प्रीतम तव अपराध शीघ्र तर क्षमा करइहैं ॥ ९ ॥
पाय प्रिया संकेत सखिन ने इमि मृदु वयना ।
जब प्रीतम सों कहे मुदित सुनि राजिव नयना ॥१०॥
पुनि निज दोउ कर जोरि सखिन सों रसिक नरेशा ।
निज अपराध बिचारि देत उत्तर हृदयेशा ॥११॥
बोलत प्राण अधार सखिन सों अति प्रिय बानी ।
सरस सुखद मन हरन मधुर प्रेमामृत सानी ॥१२॥
हे सब सहचरि बृन्द कियो अपराध अपारा ।
मैंने तुम सब केर दियो दुख दुसह दवारा ॥१३॥
याते मम अपराध सकल मिलि क्षमा करीजै ।
मो कहँ आपन जानि हृदय में मोद भरीजै ॥१४॥
सुनि पिय के इमि बचन रचन रस प्रेम समाने ।
लागीं करन प्रणाम जोरि कर हिय हुलसाने ॥१५॥
हम चाहत अपराध क्षमा यह पिय की बानी ।
सुनि सब सहचरि बृन्द मुदित मन में सुख मानी ॥१६॥
स्वामिनि सों करि विनय पिया को बन्धन छोरेउ ।
पुनि करि मधुर सु गान पियहिं रस सागर बोरेउ ॥१७॥
बहुरि प्रिया संयुक्त पियहिं स्नान कराई ।
अंगराग तन लेपि ललित शृंगार सजाई ॥१८॥

बसन विभूषण सुभग सकल अंगन पहिराई।
सुर तरु तर वेदिका मध्य दोउ को पधराई ॥१६॥
षट रस चतु प्रकार सरस तर मधुर असन वर।
दायक तुष्टि सु पुष्टि स्वाद सम्पन्न मोद कर ।२०॥
व्यंजन विविध प्रकार अमित मेवा पकवाना।
प्रीतम प्रियै पवाय परस्पर दोउ सुखमाना ॥२१॥
पायो सखिन प्रसाद मोद युत हिय हर्षाई।
पिय प्यारिहिं अचवाय सरस ताम्बूल पवाई ॥२२॥
सुमन माल पहिराय अतर वर घ्राण कराई।
मणिमय दीपक थार साजि हिय नेह बढ़ाई ॥२३॥
प्रमुदित आरति करन लगीं सब मोद समाई।
निरखि युगल मुख कंज मंजु नृत्यत हर्षाई ॥२४॥
गावत रस मय गान बहुरि पुष्पांजलि दीनी।
राई लोन उतारि तोरि तृण रति रस भीनी ॥२५॥
वन्दे सिय पिय चरण कमल कोमल कमनीया।
पावहिं परमानन्द सकल सखि गन रमनीया ॥२६॥
इमि बीतो सो दिवस भई सन्ध्या सुखदाई।
गावहिं कोकिल वयनि सुनत मन मोद बढ़ाई ॥२७॥
दिव्य भव्य मणि रचित रत्न मय पलँग सुहावन।
तापर सोवन लगे युगल मूरति मन भावन ॥२८॥
चहुँदिशि सखी समाज सौज सेवा कर लीने।
निरखहिं युगल किशोर सु छबि गावहिं रस भीने ॥२६॥

यों कहि बोले सूत सुनहु सब ब्रह्म ऋषय वर ।
वृश्चिक रासी केर रास यह परम मोद कर ।।३०।।
वैभव विपुल विहार बिविध बिधि विशद बिनोदा ।
रति रस रमण विशेष सखिन हिय दायक मोदा । ३१।।
आगम निगम पुराण सार संतन हिय सम्पति ।
यह रस क्रीड़ा कलित कीन सखियन युत दम्पति ।।३२।।
श्री सद्गुरु भगवान व्यास जी केर प्रसादा ।
मैं पायो यह चरित सकल उर प्रद अह्लादा ।।३३।।
सो मैं तुम से कहा पुण्य जब कोटि जनम की ।
होय पुरातन उदय मिटै सताप जनन की ।।३४।।
तब यह निर्मल चरित्र चित्त सों चर्चित करि के ।
पावै परमानन्द हृदय में अति रस भरि के ।।३५।।
जब यह केलि पुनीत चित्त में चिन्तन होई ।
अनायास रस सर्व छुटैं जग की जड़ खोई ।।३६।।
नाशै बिषय बिकार युगल चरणन रति जागै ।
निशिदिन "सीताशरण" प्रिया प्रीतम रस पागै ।।३७।।
जब लगि यह वर चरित्र चित्त चिन्तन नहिं करई ।
मिटि न सकै संसार यतन कोटिन करि मरई ।।३८।।
मैं वर्णन यह चरित क्रियो अनुचित भा जोई ।
मैं विनवौं कर जोरि कृपा करि क्षमिये सोई ।।३९।।
जयति युगल चित चोर चतुर चूड़ामणि छवि धर ।
जय जय प्रीतम प्रिया प्राण वल्लभ रसेश वर ।।४०।।

जयति सिया संयुक्त श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
जय जय सखियन संग रंग रस रँगि जग वन्दन ॥४१॥

जयति लाड़िली लाल ललित लीला रस पागे ।
जय जय "सीताशरण" प्रिया प्रीतम अनुरागे ॥४२॥

जयति मैथिली रमण राम रमणी मृदु रूपा ।
जय जय "सीताशरण" युगल वर अमल अनूपा ॥४३॥

जयति जानकी जान जयति रघुवर पट रानी ।
जय जय "सीताशरण" सरस रसमय रस दानी ॥४४॥

जयति सहचरी बृन्द प्रिया प्रीतम पद प्रेमा ।
जय जय "सीताशरण" देहु कीजिय मम क्षेमा ॥४५॥

जयति रसिक शिर मौर जयति मिथिलेश दुलारी ।
जय जय "सीताशरण" चरण पर हौं बलिहारी ॥४६॥

जयति स्वामिनी सीय जयति अवधेश सुवन वर ।
"सीताशरण" अधार भाव ग्राहक उदार तर ॥४७॥

जयति सिया सुख सदन मदन मद हर रसेश वर ।
जय जय "सीताशरण" मैथिली मंजु मोद कर ॥४८॥

जयति कृपा गुण शील सिन्धु सियस्वामिनि मोरी ।
जय जय रसिक नरेश मधुर मूरति रस बोरी ॥४९॥

जयति श्याम घन सदृश राज सुत रूप रसिक वर ।
जय जय "सीताशरण" मैथिली विद्युत छवि हर ॥५०॥

दोहाः—जय जय जय मिथिलेशजा, जय अवधेश कुमार ।
जय जय सीताशरण मम, जीवन प्राण अधार ।।

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलासे, साध्य कन्या रस रास रासे, सीताशरण सुमति प्रकाशे त्रयोदशोऽध्यायः सम्पूर्णमस्तु ।

❋ चतुर्दशोऽध्यायः ❋

❋ धुर धनुण्यार्के गुह्यकदेव कन्यारास प्रकरणम् ❋

छन्दरोलाः—

वदत विमल वर वयन विपुल विधि विशद विनोदा ।
श्री मद् सूत सुजान सुनत शौनक लहें मोदा । १ ।।
प्रातः काल पुनीत ब्रह्म बेला सुखदाई ।
नवल नायिका वृन्द युगल पद प्रेम बढ़ाई ।। २ ।।
वीणा मधुर बजाय सरस प्रिय राग सुनाई ।
नृत्यत हिय हर्षाय परम रस रंग समाई ।। ३ ।।
गावहिं भैरवि राग मधुर मन हरन सरस तर ।
गइ रजनी भयो भोर जागिये युगल रसिक वर ।। ४ ।।
बाँचत विप्र सुवेद वन्दिगन विरद सुनावत ।
बोलत शुक पिक हंस दरश हित हिय ललचावत ।। ५ ।।
हे मम जीवन मूरि कृपामयि जनक दुलारी ।
हे चितचोर किशोर रसिकमणि रासबिहारी ।। ६ ।।
जय जय पूरित प्रेम भाव ग्राहक रस रूपा ।
नित नव केलि कलोल मगन छबि सिन्धु अनूपा ।। ७ ।।